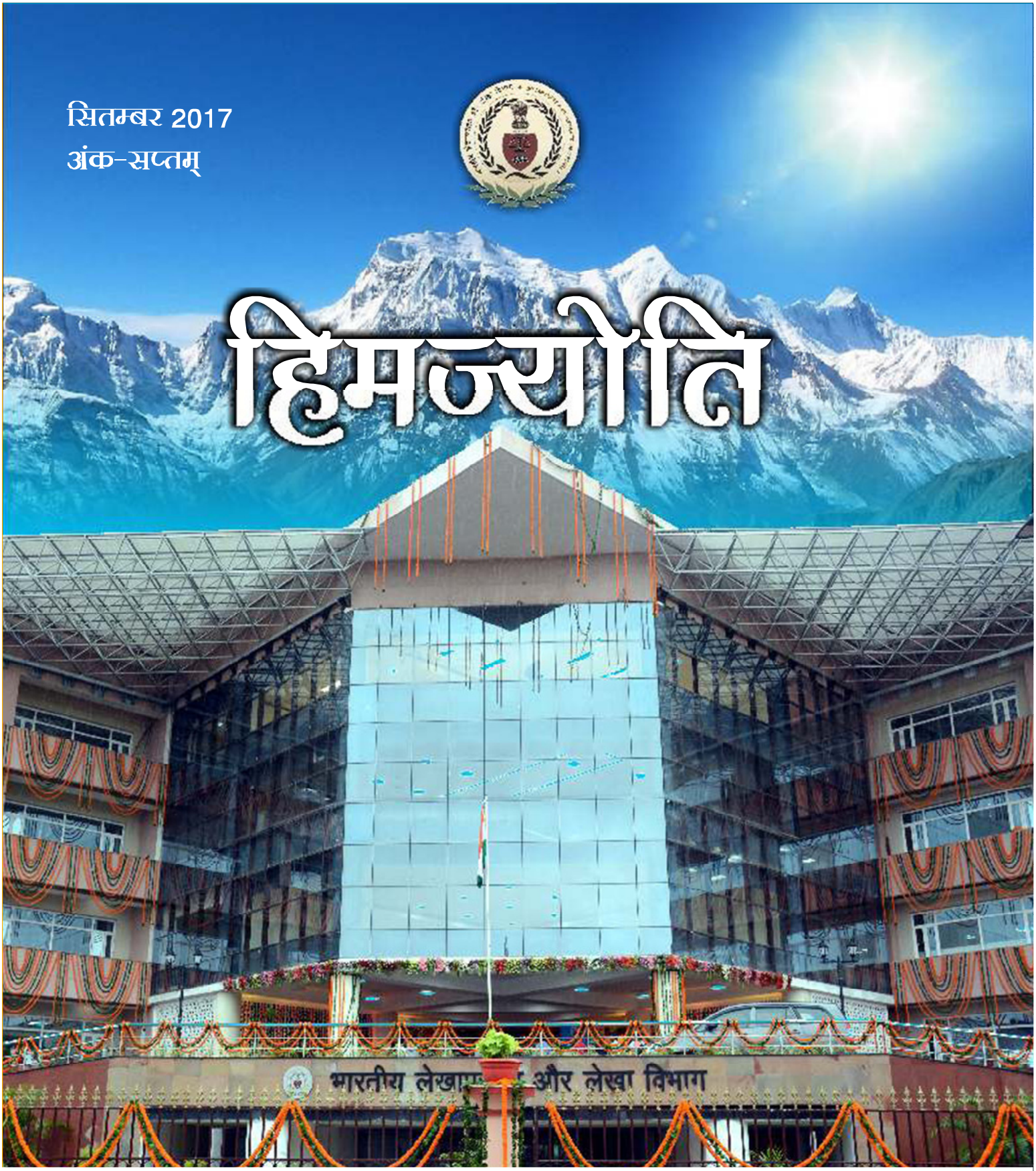


कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

उत्तराखण्ड, देहरादून

सितम्बर 2017 | अंक-सप्तम्

हिमज्योति



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून

सत्यमेव जयते



अशोक सिन्हा

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड

संदेश

मेरे लिए यह बहुत हर्ष का विषय है कि हिमज्योति पत्रिका का सप्तम् संस्करण आपके कर–कमलों में सुशोभित है। राजभाषा हिंदी को समर्पित हमारी यह पत्रिका हिंदी के सतत् विकास एवं प्रचार–प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रही है, ऐसा मेरा मानना है।

हम अपने संवैधानिक कर्तव्यों एवं दायित्वों के निर्वहन के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के उन्नयन के प्रति सदा जागरूक रहें जिससे राष्ट्र के चहुँमुखी विकास में हिंदी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सके। राजभाषा हिंदी को शीर्ष स्थान तभी सम्भव है जब हम दृढ़ संकल्प के साथ अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यो में बिना किसी संकोच के अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करें।

मै पत्रिका के सफल सम्पादन के लिए सम्पादक मंडल के सदस्यों व रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा मैं उन सभी प्रबुद्ध पाठकों को धन्यवाद देता हूँ जिनके बहूमूल्य सुझावों ने पत्रिका का मार्गदर्शन एवं रचनाकारों को प्रोत्साहित किया।

अ. सिन्हा

संरक्षक एवं निदेशक

''पत्रिका परिवार''

संरक्षक एवं निदेशक	:	श्री अशोक सिन्हा महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
प्रधान संपादक	:	श्री एन. के. डबराल उपमहालेखाकार (प्रशासन एवं लेखा)
सम्पादक	:	श्री महेश कुमार बत्रा उपमहालेखाकार (निधि)
सलाहकार संपादक	:	श्री विनोद कुमार शर्मा वरिष्ठ लेखाधिकारी
सहायक संपादक	:	श्री भास्करानन्द त्रिपाठी सहायक लेखाधिकारी
		श्री सुशील देवली सहायक लेखाधिकारी
		श्री महावीर सिंह रावत सहायक लेखाधिकारी
		श्री दिनेश कुमार सहायक लेखाधिकारी
साज सज्जा एवं टंकण	:	श्री अमित कुमार डी.ई.ओ.
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति निष्ठा

रचनाकारों के विचारों से संपादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।

सत्यमेव जयते



एन. के. डबराल

उप महालेखाकार (प्रशासन एवं लेखा)
उत्तराखण्ड

प्रधान संपादक की कलम से..

हमारे लिए गौरव का विषय है कि ''हिमज्योति'' पत्रिका का सप्तम् संस्करण आपके कर–कमलों में अर्पित है। राजभाषा हिंदी को समर्पित हिमज्योति पत्रिका हिंदी के सतत् उत्थान के मार्ग पर अग्रसर है, ऐसा मेरा विश्वास है।

राजभाषा हिंदी के प्रति आज सम्पूर्ण राष्ट्र में एक सकारात्मक माहौल की झलक देखने को मिल रही है, यहां तक कि विदेशी धरती पर भी हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा मिल रहा है, जो राजभाषा हिंदी के उत्थान के लिए एक मूल संकेत है। राजभाषा हिंदी हमारी सभ्यता, संस्कृति तथा विकास की अग्रणी पंक्ति में प्रतिस्थापित है। इसलिए हमें क्षेत्रीय भाषाओं का सम्मान करते हुए राजभाषा हिंदी के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध होना होगा, जिससे हिंदी राजभाषा से राष्ट्रभाषा का स्थान ग्रहण कर सके।

मैं पत्रिका के सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होने पत्रिका के प्रकाशन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रधान सम्पादक

हिमज्योति परिवार



बैठे हुए (बायें से दायें) :
श्री एन. के. डबराल
उपमहालेखाकार (प्रशासन एवं लेखा)– प्रधान संपादक,
श्री अशोक सिन्हा
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)–संरक्षक एवं निदेशक,
श्री महेश कुमार बत्रा
उपमहालेखाकार (निधि)–संपादक

खड़े हुए (बायें से दायें) :
श्री दिनेश कुमार, सहायक लेखाधिकारी–सहायक संपादक,
श्री वी. के. शर्मा, वरिष्ठ लेखाधिकारी–सलाहकार संपादक,
श्री भास्करानन्द त्रिपाठी, सहायक लेखाधिकारी–सहायक संपादक,
श्री सुशील देवली, सहायक लेखाधिकारी–सहायक संपादक

सत्यमेव जयते



महेश कुमार बत्रा
उप महालेखाकार (निधि)
उत्तराखण्ड

संपादकीय...

यह हमारे लिए प्रसन्नता का विषय है कि हम "हिमज्योति" पत्रिका का सप्तम् संस्करण अपने प्रबुद्ध पाठकों के कर कमलों में समर्पित कर रहे हैं। राजभाषा हिंदी के सतत् उत्थान व प्रचार–प्रसार में पत्रिकाएं अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती हैं। आज के भागम–भाग भरे जीवन में हमारे रचनाकारों ने अपने संवैधानिक कर्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते हुए राजभाषा हिंदी के प्रति अपने को समर्पित किया है।

संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी के विकास एवं प्रचार–प्रसार का उत्तरदायित्व संघ सरकार को सौंपा गया है। संघ सरकार राजभाषा हिंदी के विकास के लिए सतत् प्रयासरत है जिससे संघ सरकार के कार्यालयों में अधिकाधिक हिंदी में कामकाज हो सके। सतत् प्रयासों के पश्चात भी अभी तक उत्साहवर्धक परिणाम सामने नहीं आये हैं। किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी राजभाषा से होती है। संघ सरकार कार्यालय होने के नाते हमारा उत्तरदायित्व बनता है कि अपने कार्यालयीन कार्यो में हिंदी का प्रयोग करे।

मै अपने सहृदय पाठकों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ। आपके बहुमूल्य सुझाव पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास में सहायक सिद्ध होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। पत्रिका के विकास हेतु आपके सुझाव आंमत्रित है।

संपादक



गत वर्ष प्रकाशित 'हिमज्योति' के षष्ठम संस्करण के लिए हमें उत्साहवर्द्धक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं। प्राप्त प्रतिक्रियाओं में से कुछ का उल्लेख नीचे किया गया है, जो कि हमें 'हिमज्योति' के इस संस्करण के लिए और अधिक प्रयास करने और गुणवत्ता में सुधार हेतु प्रेरणा एवं विश्वास देती है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह अंक पूर्व की अपेक्षा और अधिक रूचिकर सिद्ध होगा तथा आप इस अंक के संबंध में अपने अमूल्य सुझाव/प्रतिक्रियाओं से हमें पूर्ववत् अवगत कराएंगे। आपकी प्रतिक्रियाएं हमारे लिए पुरस्कार के समान हैं।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'हिमज्योति' के षष्ठम वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। मुख पृष्ठ अत्यंत मोहक है। इसकी आंतरिक साज सज्जा और पृष्ठों की गुणवत्ता अच्छी है।

पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख एवं रचनाएँ सृजनात्मकता से ओत–प्रोत है। विशेषकर श्री अजय कुमार पाल की देशभक्ति कविता 'वीर गान', श्री दिनेश शर्मा की कविता ''जन्म से पहले,'' ''सेल्फ किलर बनती सेल्फी'' (दीपा पंवार), ''कुछ ऐसे लोग भी होते है'' (ओम प्रकाश) सराहनीय हैं।

संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय, महालेखाकार (लेखा एवं हक0), तमिलनाडु

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'हिमज्योति' के षष्ठम वें अंक पत्र संख्या हिंदी अनुभाग/गृह पत्रिका/हिमज्योति–षष्ठम अंक/277, दिनांक 19.10.2016 प्राप्त हुआ।

पत्रिका में अन्तर्निहित सभी रचनाएँ अत्यंत शिक्षाप्रद, नीतिपरक एवं रोचक हैं। ये सभी रचनाएं अत्यंत सराहनीय और प्रासंगिक भी है।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी/राजभाषा
भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग, प्रधान निदेशक,
लेखापरीक्षा का कार्यालय, केन्द्रीय, कोलकाता

महोदय,

हिंदी गृह पत्रिका "हिमज्योति" के छठे अंक की प्रतियां प्राप्त हुईं, धन्यवाद।आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका 'हिमज्योति' का पृष्ठ अत्यंत मोहक है, इसकी आन्तरिक साज सज्जा और पृष्ठों की गुणवत्ता अच्छी है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा उन्नयन हेतु विभाग का यह कार्य स्तुत्य एवं सराहनीय है। "लाखामण्डल–भ्रमण" श्री एस. एस. तोमर, "जन्म से पहले" श्री दिनेश शर्मा, "अलादीन का चिराग" कु0 बबीता, "जल और स्वास्थ्य" श्री दिनेश कुमार, "सीख" श्री अमित कुमार, "ग्लोबल वॉर्मिंग" श्री संजय अन्तल, "बाबा केदारनाथ की महिमा" श्री बृजभूषण सेमवाल का आलेख सराहनीय है। पत्रिका का कलेवर एवं पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के सफल सम्पादन, रचनाओं के चयन, संकलन एंव प्रकाशन हेतु सम्पादक तथा सम्पादकीय परिवार के सभी सदस्यों को बधाई और पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (बिल्स)
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (सा.व.सा.क्षे.ले.प.) कर्नाटक, बैंगलूरू

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका 'हिमज्योति' के षष्ठम अंक (वर्ष 2016) की एक प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई। तदहेतु धन्यवाद!

पत्रिका के आवरण–पृष्ठ पर छायांकित छायाचित्र एवं पृष्ठों की साज–सज्जा बहुत ही सुंदर है, साथ ही साथ पत्रिका में प्रकाशित अन्य सभी राजभाषा गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र काफी अच्छी लगीं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर श्री अजय कुमार पाल (वीर गान), श्रीमती दीपा पंवार (एक चलती–फिरती रंगीन 'दुनिया'), श्री अजय कुमार (माँ की दुआ), श्री ओम प्रकाश (कुछ ऐसे लोग भी होते हैं), श्री दिनेश कुमार (वृद्धाश्रम क्यों?), श्री बृजभूषण सेमवाल (बाबा केदारनाथ की महिमा), श्री महावीर सिंह रावत (कैसे मनाऊं) एवं श्री प्रशांत जोशी (भक्त का भाव) की रचनाएं अत्यन्त ही सराहनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संपादन एवं संकलन हेतु संपादन मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

सहायक लेखा अधिकारी/प्रशासन, हिंदी सेल
भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग, महालेखाकार (लेखा एवं हक0), पश्चिम बंगाल

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्रांक: हिंदी अनुभाग/गृह पत्रिका/हिमज्योति–षष्ठम अंक/277 दिनांक 19.10.2016 द्वारा हिंदी पत्रिका 'हिमज्योति' के षष्ठम अंक की प्राप्ति हुई। तद्हेतु धन्यवाद!

पत्रिका में समाविष्ट समस्त रचनाएं अतिरोचक, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सम्पादन और कलेवर की दृष्टि से पत्रिका सुरूचिपूर्ण एवं सुंदर बन गई है। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक–मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास आगे भी जारी रखें।

व0 उपमहालेखाकार (प्रशासन)
महालेखाकार (ले.एवं ह.) का कार्यालय, असम, मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका ''हिमज्योति'' षष्ठम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का मुद्रण आकर्षक है। संकलित समस्त रचनाएँ सरस एवं पठनीय है। विशेष रूप से श्री ओम प्रकाश का लेख 'कुछ लोग ऐसे होते है' श्री अमित कुमार की 'सीख' भास्करानन्द त्रिपाठी का 'डाक बाबू की वापसी' एवं श्री महावीर सिंह रावत की 'कैसे मनाऊँ' उत्कृष्ट हैं।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु शुभकमामनाएँ।

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंदी
कार्यालय, महालेखाकार (ले0 एवं हक0), प्रथम
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्रांक–हिंदी अनुभाग/गृह पत्रिका/हिमज्योति–षष्ठम अंक/227 दिनांक 19.10.2016, द्वारा हिंदी पत्रिका ''हिमज्योति'' के षष्ठम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई।

पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ अच्छी, प्रभावी, सारगर्भित व पठनीय है। पत्रिका की साज सज्जा व आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। श्री एस.एस. तोमर का लेख 'लाखामण्डल भ्रमण', श्री दिनेश शर्मा की कविता 'जन्म से पहले', श्रीमती दीपा पंवार का लेख 'सेल्फ–किलर बनती सेल्फी', श्री अजय कुमार की कविता 'माँ की दुआ,' श्री ओम प्रकाश का संस्मरण 'कुछ ऐसे लोग भी होते है,' श्री दिनेश कुमार का लेख 'वृद्धाश्रम क्यों' आदि के साथ–साथ अन्य संकलन एवं कविताएँ भी रोचक है। सभी रचनाएँ बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिए सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यगण बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
महालेखाकार (ले0 एवं हक0) का कार्यालय,
बिहार, पटना

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" के षष्ठम अंक की प्रति प्राप्त हुई। तदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद व प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ–साथ उसकी साज–सज्जा अर्थात कलेवर, मुद्रण और उसमें अंर्तनिहित फोटो सराहनीय है। पत्रिका में समाहित रचनाएँ, विशेषकर– "माँ की दुआ" "सीख", "वृद्धाश्रम क्यों" "बाबा केदारनाथ की महिमा" बहुत रोचक हैं।

पत्रिका के सफल संपादन तथा प्रकाशन मंडल को बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय, महालेखाकार (लेखा परीक्षा), उत्तराखण्ड

महोदय,

पत्र सं0: हिंदी अ./लेखा तरंग/षष्ठम अंक/ 53955 दिनांक 03.10.2016 द्वारा आपकी पत्रिका "हिमज्योति" की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की साज–सज्जा एवं कलेवर अति उत्तम है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद एवं प्रशंसनीय है पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ विशेषकर–लाखामण्डल–भ्रमण, एक चलती–फिरती रंगीन दुनिया, जन्म से पहले, अलादीन का चिराग, सेल्फ किलर बनती सेल्फी, पैगाम, जल और स्वास्थ्य, माँ की दुआ, कुछ ऐसे लोग भी होते हैं, बुढ़ा हो रहा आईना, ग्लोबल वॉर्मिंग, मानसून स्पेशल, वृद्धाश्रम क्यों, सुरक्षित भविष्य के लिये उचित निवेश, डाक बाबू की वापसी बहुत रोचक हैं। पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई एवं भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय, महालेखाकार (लेखा परीक्षा), उत्तराखण्ड

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र संख्याः हिंदी अनुभाग/गृह पत्रिका/हिमज्योति–षष्ठम अंक/277 दिनांक 19.10.2016 के साथ हिमज्योति का षष्ठम अंक प्राप्त हुआ।

पत्रिका में राजभाषा गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र अत्यन्त मनमोहक है। इस अंक में समाविष्ट रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय है। विशेषकर कु0 बबीता का "अलादीन का चिराग", सुश्री दीपा पंवार का "सेल्फ–किलर बनती सेल्फी" तथा श्री दिनेश कुमार का "वृद्धाश्रम क्यों" रोचक लेख हैं। वीर गान, जन्म से पहले, माँ की दुआ, कैसे मनाऊँ तथा भक्त का भाव कविताएँ प्रशंसनीय हैं। डाक बाबू की वापसी कहानी प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संपादन व संकलन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

लेखा अधिकारी/राजभाषा
प्रधान महालेखाकार (ले0 एवं हक0)–प्रथम का कार्यालय,
मध्य प्रदेश,ग्वालियर

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र क्रमांकः सं/हिंदी अनुभाग/गृह पत्रिका/हिमज्योति–षष्ठम अंक/277 दिनांक 19.10.2016 द्वारा हिंदी पत्रिका हिमज्योति के 6वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट हैं। विशेष रूप से सीख, बूढ़ा हो रहा आईना तथा कर्म करो सराहनीय है। पत्रिका की साज–सजावट उत्कृष्ट दर्जे की है।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य के शुभकामनाओं सहित।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (ले0 प0)–1,
महाराष्ट्र मुम्बई

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "हिमज्योति" के षष्ठम अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में निहित, सभी रचनाएं सुपाठ्य एवं ज्ञानवर्धक हैं। सारी रचनाएं सराहनीय एवं प्रेरणात्मक हैं।

"अलादीन का चिराग," "सेल्फ–किलर बनती सेल्फी," "कुछ लोग ऐसे भी होते हैं," आदि लेख अच्छे लगे। "माँ की दुआ," "कैसे मनाऊँ" आदि कविताएं अच्छी हैं।

पत्रिका की उज्जवल भविष्य की आशा करते हैं।

हिंदी अधिकारी
महालेखाकार (ले0 एवं हक0) का कार्यालय,
आंध्र प्रदेश तथा तेलंगाना, हैदराबाद

महोदय,

आपके कार्यालय की "हिमज्योति" के छठें अंक की 2 प्रतियाँ प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री अजय कुमार पाल की कविता "वीरगान", श्री एस.एस.तोमर का लेख "लाखा मण्डल–भ्रमण", श्री दिनेश शर्मा की कविता "जन्म से पहले" , कु0 बबीता का लेख "अलादीन का चिराग", सुश्री दीपा पंवार का लेख "सेल्फ–किलर बनती सेल्फी," श्री संजीव जखमोला की कविता "पैगाम" , श्री दिनेश कुमार का लेख "जल और स्वास्थ्य" तथा "वृद्धाश्रम क्यों", श्री विनोद कुमार शर्मा का लेख "अनुरोधकर्ताओं को सूचनाः ध्यानार्थ बिन्दु," श्री अमित कुमार की "सीख" श्री ओम प्रकाश का संस्मरण "कुछ लोग ऐसे भी होते हैं," श्री अनुज कुमार का लेख "कैरियर विकल्प के चयन से पहले," श्री एस.जे.राय चौधरी का लेख "सुरक्षित भविष्य के लिए उचित निवेश," श्री महावीर सिंह रावत का लेख "कोषागार....विचारणीय बिंदु," श्री बृजभूषण सेमवाल का लेख "बाबा केदारनाथ की महिमा," श्री भास्करानन्द त्रिपाठी का लेख "डाक बाबू की वापसी," श्री प्रशान्त जोशी की कविता "भक्त का भाव" आदि रचनाएँ उल्लेखनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में दिए कार्यालीन चित्र पत्रिका की सुन्दरता को बढ़ाते हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं अन्तिम पृष्ठ बहुत सुन्दर है ।

लेखकों एवं सम्पादक मंडल को पत्रिका के कुशल एवं सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरन्तर उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय, महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–II,
महाराष्ट्र, नागपुर

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" के षष्ठम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका में संकलित सामग्री पठनीय, सराहनीय एवं संग्रहणीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार एवं प्रसार हेतु आपका यह प्रयास प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंदी कक्ष,
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक0) का कार्यालय,
कर्नाटक

महोदय,

संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" के षष्ठम अंक की प्राप्ति हुई। अतः आभार स्वीकार करें।

"हिमज्योति" पत्रिका आपके कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभा का आईना है। सेल्फ–किलर बनती सेल्फी (दीपा पंवार), पैगाम (संजीव जखमोला) तथा कुछ लोग ऐसे भी होते हैं (श्री ओम प्रकाश) रचनाएं विशेष रूप से प्रभावित करती हैं। एस.जे.राय चौधरी द्वारा रचित लेख "सुरक्षित भविष्य के लिये उचित निवेश" बहुत लाभप्रद है। पत्रिका की साज–सज्जा व आवरण पृष्ठ भी सुंदर है।

हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका "हिमज्योति" के उज्ज्वल भविष्य के लिए "सुगंधा" परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग,
कार्यालय, महालेखाकार (लेखा परीक्षा), चण्डीगढ़, पंजाब

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" के षष्ठम अंक की प्रति प्राप्त हुई। तदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं इसमें समाहित छायाचित्र अपनी भव्यता लिए हुए हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं रोचक होने के साथ ज्ञानवर्धक भी हैं। विशेषकर श्री अजय कुमार पाल की कविता "वीरगान" श्री दिनेश कुमार का लेख "जल और स्वास्थ्य," सुश्री दीपा पंवार का लेख "सेल्फ–किलर बनती सेल्फी" एवं श्री अमित कुमार की कविता "सीख" विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,राजभाषा अनुभाग
भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग,
कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा),
राजस्थान जनपथ, जयपुर

महोदय,

आपके पत्र सं.– हिंदी अनुभाग/गृह पत्रिका/हिम ज्योति– षष्ठम अंक/277, दिनांक 19.10.2016 के साथ कार्यालय की पत्रिका ''हिमज्योति'' के षष्ठम अंक की प्राप्ति हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत मोहक है। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय है। विशेषकर श्री दिनेश शर्मा की ''जन्म से पहले'' श्री अजय कुमार की ''माँ की दुआ'' श्री भारत शर्मा की ''संघर्ष'' एवं श्री अनिल राठौर की ''कर्म करो'' विचार प्रधान, प्रेरक एवं उपयोगी हैं। पत्रिका के सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

यह पावती वरि. उपमहालेखाकार (प्रशासन) के अनुमोदनोपरान्त जारी की जा रही है।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) का कार्यालय,
ओडिशा, भुवनेश्वर

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी वार्षिक गृह पत्रिका ''हिमज्योति'' का षष्ठम अंक की प्रति प्राप्त हुई तदहेतु धन्यवाद।

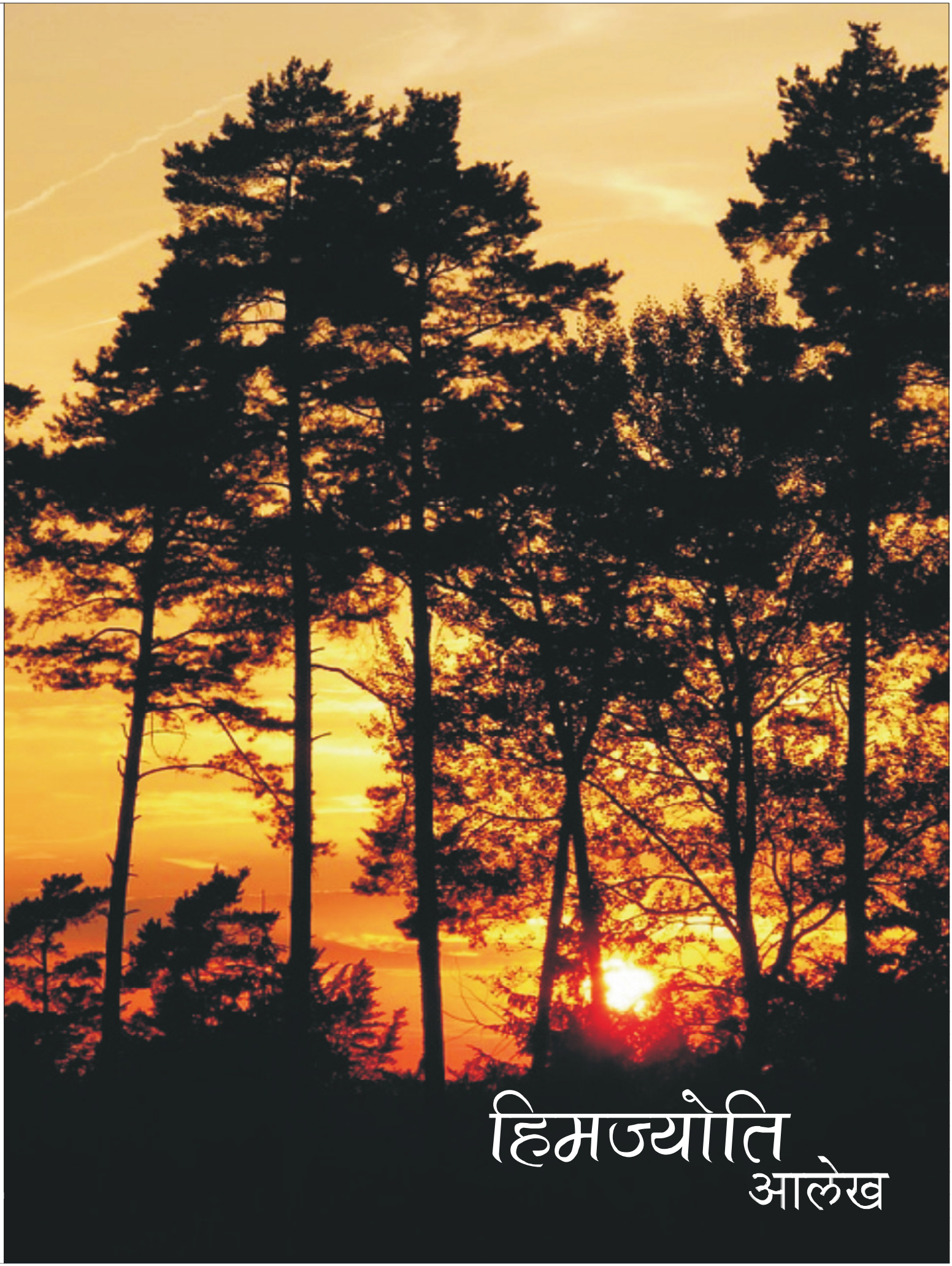
पत्रिका में प्रकाशित लेख कविताएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका का मुख्यपृष्ठ बहुत आकर्षक है।

वरिष्ठ लेखाधिकारी/प्रशासन
कार्यालय वरिष्ठ उप–महालेखाकार (ले0 एवं ह0) सिक्किम

अनुक्रमणिका

विधा	रचना का नाम	रचनाकार (सर्व श्री / श्रीमती / सुश्री)	पृष्ठ सं0
गजल	गजल	**सुशील कुमार देवली**	18
कविता	तू है तो मैं हूँ	**फिरोज़ मलिक**	18
लेख	कोशिश	**दिनेश कुमार**	19
कविता	कोलाहल	**शिवम लिल्हौरी**	20
कविता	नज्म	**सुशील कुमार देवली**	21
कविता	मैं क्या कहूं	**महावीर सिंह रावत**	21
लेख	बालश्रम के उन्मूलन की आवश्यकता	**विनोद कुमार शर्मा**	22
कविता	सुनहरे बचपन की यादें	**प्रशांत कुमार**	23
लेख	योग का महत्व	**विनोद कुमार शर्मा**	24
लेख	खिचड़ी	**ओम प्रकाश**	25
कविता	संगम	**एस.एस. तोमर**	27
कविता	काश ऐसा संसार हो	**अमित कुमार**	28
गजल	रोशनी	**दीपा पंवार**	28
कविता	शहादत	**प्रशांत जोशी**	29
कविता	बढ़ते कदम	**पूजा त्रिपाठी**	29
लेख	तपोभूमि है बद्रीनाथ धाम	**बृजभूषण सेमवाल**	30
कविता	बेबस दिल	**शिवम लिल्हौरी**	32
लेख	मां वैष्णोदेवी की यात्रा वृतांत	**महावीर सिंह रावत**	33
कविता	बदली सी बयार	**भास्करानन्द त्रिपाठी**	35
कविता	एक बार फिर	**शिवम लिल्हौरी**	35

लेख	चींटियों को पहले ही चल जाता है भूकंप का पता	**अमित कुमार**	36
कविता	उलझे धागे	**भास्करानन्द त्रिपाठी**	36
सूची	वर्ष 2016–17 शैक्षिक सत्र के दौरान हाईस्कूल/इंटरमीडिएट परीक्षाओं में उच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं का संक्षिप्त विवरण	**पत्रिका प्रकोष्ठ**	37
सूची	पारिभाषिक शब्दावली अंग्रेजी शब्दों के सरल तथा उपयुक्त हिन्दी शब्द	**दिनेश कुमार**	38
सूची	वर्ष 2016–17 के दौरान उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रमाण पत्र तथा नकद पुरस्कार पाने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों का संक्षिप्त विवरण	**प्रशासन–1**	41
सूची	हिंदी सप्ताह वर्ष 2016–17 की खास झलकियां	**हिन्दी अनुभाग**	42
छायाचित्र	नवनिर्मित कार्यालय भवन "महालेखाकार भवन" का सीएजी द्वारा दिनांक 12.07.2017 को उद्घाटन	**सामान्य प्रशासन अनुभाग**	44
छायाचित्र	मनोरंजन क्लब की ओर से आयोजित खेल प्रतियोगिताएं	**मनोरंजन क्लब**	54
छायाचित्र	स्वतन्त्रता दिवस समारोह–2017	**मनोरंजन क्लब**	56



हिमज्योति
आलेख

ग़ज़ल



सुशील देवली
स0 लेखाधिकारी

लम्बे सफर के कुछ साथी पुराने छूटे ।।
बरगद के पेड़ से फिर पत्ते पुराने छूटे ।।

ऊंगलियाँ थामें रहे जो मेरी पतले तंग रस्तों में,
जाने पहचाने हाथों के दस्तखत सयाने छूटे ।।

वक्त भी साँसों का लेखा चुपचाप गिनता रहा,
जितना चले सफर में उतने यादों के जमाने छूटे ।।

लगता है दस्तूरे सफर में सब कुछ छूट जायेगा।
उम्र के इस सफर में बहुत कुछ पुराने घराने छूटे ।।



"मौन सबसे सशक्त भाषण है।
धीरे–धीरे दुनियां आपको सुनेगी।"
महात्मा गांधी

तू है तो मैं हूँ



फिरोज मलिक
डी.ई.ओ.

तू ख्वाब है एक	–	तुझे देखने की तमन्ना है
तू आरजू है एक	–	तुझे पूरा करने की तमन्ना है
तू गीत है एक	–	तुझे गाने की तमन्ना है
तू मीत है एक	–	तुझे मितवा बनाने की तमन्ना है
तू नदी है एक	–	तुझमें डूब जाने की तमन्ना है
तू समंदर है एक	–	तुझमें समां जाने की तमन्ना है
और		
तू दिया है एक	–	तुझमें जल जाने की तमन्ना है।



"श्रद्धा की कमी ही सारे कष्टों
और दुखों की जड़ है।"
सुभाष चन्द्र बोस

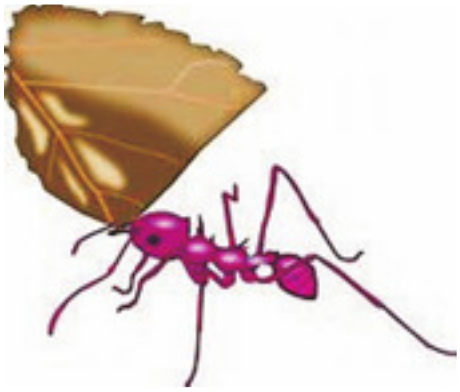
कोशिश



दिनेश कुमार
स0 लेखाधिकारी

किसी व्यक्ति ने एक संत से पूछा कि अगर कोई व्यक्ति कोशिश करके थक जाये, तब उसे क्या करना चाहिये। संत ने उत्तर दिया उसे एक बार और कोशिश करना चाहिये। इस प्रश्नोत्तर में जीवन की सफलता और जीवन्तता का रहस्य छुपा है। कोशिश का विकल्प बस कोशिश है और कुछ नहीं, जो व्यक्ति के जीवन के इस सच को समझ लेता है वह कभी निराश नही होता। वह जीवन को सजीव होकर जी लेता है, भले ही उसका अभीष्ट उसे हासिल न हो। उसे अन्त तक इस बात का मलाल नहीं घेर पाता कि उसने कोशिश नहीं की। उसके अन्दर कोई हीन भावना, कोई अपराध बोध जन्म नहीं ले पाता। लगातार की गई कोशिशें उसके अस्तित्व को निखारती और बढ़ाती चली जाती हैं और अन्ततः उसका जीवन सफल हो जाता है।

आशावादी होना ही जीवन है– हमें आशावादी जीवन जीना चाहिये। सच यह है कि आशावादी होना एक साधना है। जीवन में एक खास नजरिया विकसित करना पड़ता है, जो भीतर से व्यक्ति को इतना मजबूत और विराट बना देता है कि जीवन की बड़ी से बड़ी समस्या और असफलता भी उसे निराशा के गर्त में ढकेलने में नाकामयाव रहती है।



संकुचित भावना का दूसरा नाम है निराशावाद– जीवन को किन्ही संकुचित लक्ष्यों के सीमित होने के अर्थ में स्वीकार नहीं करना चाहिये। जैसे कि यदि हम यह पा लेगें तो हमारा जीवन सफल हो जायेगा। हमें अमुक लक्ष्य हासिल नहीं हुआ। अतः हमारा जीवन व्यर्थ चला गया। इस तरह का सकुंचित नजरिया ही जीवन में निराशा के भाव पैदा करने का मूलभूत कारण है। सच यह है कि जीवन असीम सम्भावनाओं का योग है और एक या दो लक्ष्यों के हासिल न होने मात्र से इसकी सम्भावनायें खत्म नहीं हो जाती।

सामान्य अनुभव की बात है कि थोड़े से प्रयासों द्वारा हासिल बड़ी उपलब्धि हमें स्थायी तौर पर सुख–शान्ति नहीं देती जो भरपूर प्रयासों द्वारा हासिल छोटी सी उपलब्धि दे सकती है। आवश्यकता सिर्फ इस यथार्थ को समझने की है। सबसे पहली बात यह है कि प्रयास भरपूर करें। ध्यान रहे कि असफलता से निराशा और निराशा से ईर्ष्या जन्म लेती है। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है, पर इससे भी बड़ा सत्य यह है कि परिश्रम या प्रयास इस सम्पूर्ण शृंखला को छिन्न–भिन्न कर देता है। इसका कारण स्पष्ट है कि जब तक मानव के भीतर प्रयास करने का हौसला बना रहेगा, तब तक वह अपने आपको असफल मान ही नहीं सकता और जब तक वह स्वयं को असफल नहीं मानेगा, तब तक निराशा और ईर्ष्या का उदय उसके जीवन में नहीं होगा। इसलिये अनवरत प्रयास के वाद जब थककर चूर हो जाये तो एक बार कोशिश और करनी चाहिये।

अंत में दूसरी बात जो महत्वपूर्ण है कि प्रयास की दिशा अपनी रूचि एवं सामर्थ्य के अनुरूप होनी चाहिये। ये संसार लक्ष्यों से भरा हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति अपने प्रयास करके अभीष्ट हासिल कर सकता है, पर एक व्यक्ति सब कुछ नहीं कर सकता। अपने परिश्रम पर तथा प्रयासों पर विश्वास रखियें, मंजिल अवश्य प्राप्त होगी। ऐसा ही सन्त कबीर ने कहा है–

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
कह कबीर हरि पाइये, मन ही की परतीत।।

"प्रसन्न रहना बहुत सरल है,
लेकिन सरल होना बहुत कठिन है।"
रविन्द्रनाथ टैगोर

कोलाहल



शिवम लिल्हौरी
लिपिक

दिनभर रही वो एक अजीव सी उधेड़ बुन में,
गुमसुम सी खामोश फंसी न जाने कैसी कशमकश में।
किसे बताएं, राज से पर्दा उठाये, न जाने कैसे यह उलझन सुलझाए,
थी नामंजूर हुई जो बात, पर इस वेहया दुनिया में क्यों अपना माखौल उड़वायें।
पीठ पीछे की छींटाकशी सहन न होगी, ऐसे बेरहम दुनिया के रवैये का कैसे सामना करेगी।
लौट के आना है कल फिर इसी जगह, चढ़ी भौहें, निहारती नज़रे सब बयाँ करेंगी।
उठाई जो उसने ऊँगुली एक, बाकि तीन भी उसकी ओर इशारा करेंगी,
ताली एक हाथ से नहीं बजती यही समझाया करेंगी।

इतनी देर से जो पलकें झपकी न थी, न जाने अपने आप कव बंद हो गयी।
अशांत मन की उथल पुथल, दूर तक फैली खामोशी में बदल गयी।
न जाने कैसे उस रात जगते जगते वो सो गयी।
भोर की पहली किरण ने निद्रा तोड़ी, बेमन से लेटी रही वो, बिस्तर न छोड़ी।

उस पल चाहिए था सर पर फिरता वह हाथ, एक अश्वासन "चिंता न कर, बेटी हम है न तेरे साथ"।
याद आई पिता की वो सीख "गर सच्ची है तू, डरना नहीं, अडिग चलना कर्तव्य पथ पर, हमेशा मिलेगी जीत"।
कर लिया जो एक निश्चय,
उतार फेकेगी नकाब तू चेहरों से।
वना बैठा है जो चरित्रवान, दिखेगा चरित्रहीन
जब निकलेगा वो अपनी केंचुली से।
अंतर्मन में उठी आवाज–



दुनिया ने तो भगवान पे भी ऊँगली उठाई,
पवित्र पावन सीता से अग्नि परीक्षा करवाई।
सोलह आने सच है बात न उसको तू छुपा,
पैरों तले रौंदने से अपने आँचल को तू बचा।
उठ.....

उठ, कर प्रतिज्ञा भीष्म सी तू,
उठा अस्त्र अर्जुन सा तू,
दुर्गा है तू, चंडी भी तू,
पीछे तेरे माधव है,
डर मत पगली दुर्योधन से तू,
संजय बन कुरूक्षेत्र का हाल सुना,
धृतराष्ट्र वने इस समाज को तू।
देख फिर तूती बोलेगी, रण बांकुरो सी ख्याति डोलेगी
गड़ेंगे झण्डे स्वाभिमानी के, जब टिकेंगे घुटने अभिमानी के।
हिम्मत तो कर नहीं हैं तू हारी, तेरी एक पहल देगी न जाने कितनो को बारी।
पोंछ वो आंसू उठ गयी,
दृढ़ निश्चयी वो बढ़ गयी.....

"संसार सुन्दर है,
क्योंकि इसे ईश्वर ने बनाया है।
जो संसार को गन्दा कहता है,
वह ईश्वर का तिरस्कार कर रहा है।"
ओशो

नज़्म



सुशील देवली
स0 लेखाधिकारी

मतलब के मसाले पड़ते हैं,
रिश्तों में आजकल.....
कहीं पर नमक ज्यादा है
कही पर नमक कम.....
और खाने में तड़के की आवाज से
रिश्तों के ज़ायके का पता चलता है।
अकसर..... !!!
जान बूझकर डाली गयी तेज मिर्च
का तीखापन दिखा जाता है
रिश्तों की तल्खियत को.....
मैनें भी बेहद तरतीब से
पकाये थे कुछ रिश्ते
मसाले भी बखूबी डाले
थे अन्दाजन सही... सही....
सोचा था जब पक जायेगें
तब स्वाद ही स्वाद होगा इनमें.....
पर पकाते समय एक ही उबाल ने
रिश्तों की ही आग को बुझा दिया
अब सब धुआँ है.....
सब धुआँ..... धुआँ..



"शान्ति की शुरूआत मुस्कराहट से होती है।"
मदर टेरेसा

मैं क्या कहूँ

मैं क्या कहूँ
कह नहीं सकती
जब अकेली होती
कुछ आँसू बहा लेती
मेरे जिस्म पर
हो रहे अनेकों वार
जब चाहिए, जो चाहिए
मेरे टुकड़े करने को तैयार
ये खौफनाक मंजर देख
कब,कौन, कहाँ गद्दारी करे
म्यानों से निकली है तलवार
कितने प्रयत्नों से
बिखरे टुकडों को संजोया गया
तब मेरी काया को
एक अखण्ड नाम दिया गया
आज मुझे बरबाद करने को
"भ्रष्टों" की टोली उमड़ी है
वजूद मेरा मिटाने को
खूंखार बनी लोमड़ी है।
मैं कुछ न कहकर
चुपचाप सह रही हूँ
अपने जिस्म के लोथड़ों को
चारों तरफ बिखरे देख रहीं हूँ
घर के कोने कोने में
हो रहा, मेरा विरोध
क्या मैं असक्त हो गयी
तभी ले रहे प्रतिशोध
क्या मुझे
घर से बेदखल करने का इरादा है
बूढ़ी माँ समझ
सम्पति अपने नाम कराने का इरादा है
मैं अशक्त नहीं
मैं सशक्त हूँ
कोटि–कोटि धमनियों में
बहता हुआ रक्त हूँ।





महावीर सिंह रावत
स0 लेखाधिकारी

"संस्कृति मन और आत्मा का विस्तार है।"
पं० जवाहर लाल नेहरू

बालश्रम के उन्मूलन की आवश्यकता



वी.के. शर्मा
व0 लेखाधिकारी

बालश्रम हमारे देश की एक गम्भीर समस्या है। हमारे देश के सामने यह एक ऐसी चुनौती है जिसका निदान अभी तक नहीं हो पाया है। इसका सबसे बड़ा कारण सामाजिक एवं आर्थिक है।

बच्चे किसी भी देश के भविष्य निर्माता होते हैं। जिस देश के बच्चों की शिक्षा–दीक्षा,स्वास्थ एवं उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है, उस देश के बच्चे ही आगे चलकर वास्तव में राष्ट्र निर्माता बनते है। ऐसे बच्चे ही भविष्य में पथ प्रदर्शक बनकर अपने देश का नाम रोशन करते है।

गरीबी एवं समुचित शिक्षा का अभाव बालश्रम के मुख्य कारणों में से है तथा जिसके कारण इन घरों के वच्चों की उचित शिक्षा–दीक्षा न होने के कारण उन्हें बालश्रम के लिए विवश होना पडता है। धनाभाव के कारण इन घरों के लोग अपने बच्चों को न तो उचित शिक्षा दिला पाते हैं तथा न ही उनके स्वास्थ्य का पर्याप्त ध्यान रख पाते हैं। परिणामस्वरूप ऐसे घरों के बच्चों का समुचित शारीरिक एवं मानसिक विकास बाधित होने के कारण ऐसे बच्चे बालश्रम करने को विवश हो जाते हैं।

वाल श्रमिकों को हम सभी ने देखा है। ऐसे बाल श्रमिकों को होटलों–ढाबों, कारीगरी वाले लघु उद्योगों, दुकानों, घरों, रेलवे स्टेशन व बस स्टाप, ठेकेदारी प्रथा द्वारा कराये जा रहे भवन निर्माण के कार्यों, कालीन निर्माण एवं अतिशबाजी उद्योगों में देखा जा सकता है। हमारे देश का कानून 14 वर्षों से कम उम्र के बच्चों को सेवा में नियोजित करने की अनुमति नहीं देता है। फिर भी इस आयु वर्ग के बच्चों को विभिन्न स्थानों पर कार्य करते हुये सरलता से देखा जा सकता है। बाल श्रमिकों को कार्य पर नियोजित करने का सबसे बड़ा कारण सस्ते श्रमिकों का लालच है। इन बालश्रमिकों को किन्ही–किन्ही स्थानों पर तो अल्प राशि का भुगतान करके मात्र रहने का स्थान एवं दो वक्त का बचा–खुचा खाने को देकर कार्य पर नियोजित किया जाता है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 6 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु के बच्चों के निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का अधिकार देता है। लेकिन निर्धनता के कारण अनेक माता–पिता मात्र कुछ पैसे कमाने के लिए अपने बच्चों से काम कराने के लिए मजवूर हो जाते हैं। अशिक्षित बच्चे बड़े होकर भी एक श्रमिक के रूप में काम करने की योग्यता रखने के कारण, देश की दूसरी ज्वलन्त समस्या बेरोजगारी में वृद्धि करते है। असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाले श्रमिकों को अनेकों प्रकार से उत्पीड़न एवं शोषण का भी शिकार होना पड़ता है। इस क्षेत्र में कार्य करने वाले श्रमिकों के कार्य के घंटे अधिक होने के साथ ही उनके स्वास्थ्य एवं अन्य मूलभूत आवश्यकताओं का भी ध्यान नहीं रखा जाता हैं। कुछ स्थानों पर तो इनसे जितना कार्य लिया जाता है, वास्तव में उसके हिसाब से उचित पारिश्रमिक का भी भुगतान नहीं किया जाता। असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाले श्रमिकों के सम्बन्ध में कई बार ऐसे मामले भी प्रकाश में आते हैं कि पगार अग्रिम मांगने या बढ़ाने का अनुरोध करने पर इनकों शारीरिक यातना तक दी जाती है, जो कि पूरी तरह अमानवीय कार्य है। अमानवीयता की हदें पार करने वाली घटनाऐं हमारे इसी सभ्य समाज में प्रकाश में आती रहती हैं।



बड़ी संख्या में बालश्रमिक ऐसे कार्यों पर भी नियोजित हैं जिनको करने के कारण उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। ऐसे बालश्रमिक कम आयु में ही अनेक गम्भीर स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का शिकार बन जाते है। कम आयु के ऐसे बच्चों को इन खतरनाक उद्योगों से बचाने एवं उनका शोषण करने वाले व्यक्तियों के विरूद्ध कठोर कार्यवाही की आवश्यकता है।

हमारे देश में सरकारी स्तर पर एवं विभिन्न गैर–सरकारी संगठनों द्वारा बाल–श्रम उन्मूलन के क्षेत्र में अनेकों कार्य किये गये हैं। उक्त प्रयासों के

बावजूद भी बालश्रम की समस्या हमारे देश में आज भी विद्यमान है। नोबल शान्ति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी ने बालश्रम उन्मूलन के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है जिसके परिणाम स्वरूप भी सत्यार्थी को यह पुरस्कार पाकिस्तान की एक्टिविस्ट मलाला युसुफजई के साथ प्रदान किया गया है। यह पुरस्कार भारत के लिए भी अत्यन्त गौरव का विषय है।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि बाल श्रमिकों का शोषण करने वाले लोगों के विरूद्ध कठोर कार्यवाही की जाए। गरीब बच्चों के माता पिता को सरकारी स्तर से भी आर्थिक संरक्षण प्रदान किए जाने की आवश्यकता है। ऐसा करने से बाल श्रम के लिए कम उम्र के बच्चे विवश नहीं होगें। निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि गरीबी एवं अशिक्षा इस समस्या के प्रमुख कारण हैं। इन कारणों को दूर करने के लिए इस क्षेत्र में सरकारी एवं गैर सरकारी, सभी स्तरों से, व्यापक रूप से समन्वित प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

"लोग अपने अधिकारों को याद रखते है,
परन्तु कर्तव्यों को भूल जाते है।"

इन्दिरा गांधी

सुनहरे बचपन की यादें...



प्रशांत कुमार
डी.ई.ओ.

अनमोल सुनहरे बचपन में
ख्वाईशों की अनगिनत, उपज हुई थी।
मम्मी के हम पागल थे
जब हमें थोड़ी, समझ हुई थी।

मां की डांट सुनते थे
बाप की मार खाते थे
पत्थर पर खिंची लकीर थे
जो सुधर नहीं पाते थे।
पढ़ते–पढ़ते सो जाते थे
सुबह उठ नहीं पाते थे
मौसम खुशनुमा होते ही
पापा के ओले पड़ जाते थे।
दिखने में भोली थी सूरत
लेकिन आवाज में थोड़ी, गरज हुई थी।
मम्मी के हम पागल थे
जब हमें थोड़ी, समझ हुई थी।

फिर दिन बदलते गये
और हम चलते गये
सब कुछ पाने की चाहत में
हवाओं के रूख बदलते गये
अब... याद आता है वो वक्त
जब मां की डांट खाने की, तलब हुई थी
मम्मी के हम पागल थे
जब हमे थोड़ी,समझ हुई थी।



"दुःख तो मानने का है, मानो दुःख का अंत नहीं है
और मानो तो मौत भी सुखदायी है।"

विष्णु प्रभाकर

योग का महत्व



वी.के. शर्मा
व0 लेखाधिकारी

21 जून को पूरे विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनया गया। इस अवसर पर पूरे विश्व में योग कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। योग दिवस के अवसर पर जो उत्साह हमारे देश में देखने को मिला वह वास्तव में अभूतपूर्व था। यह इस बात को प्रतीक है कि हमारे देश में बहुत बड़ी संख्या में जन सामान्य योग को अपनी जीवन शैली को हिस्सा बना रहे हैं। यह वास्तव में उत्साह जनक है तथा यह अभिमान हमाने देश के जन सामान्य को निरागी बनाने में कारगर होगा सिद्ध होगा, यह निश्चित रूप से कहां जा सकता है।

योगाभ्यास एवं प्राणायाम किसी भी व्यक्ति की जीवन शैली को संतुलित करता है, उसमें स्थिरता लाता है तथा एकाग्रचित करने में सहायक होता है। योग का जनसामान्य के स्वास्थ्य से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। योग मनुष्य को निरोगी बनाता है तथा स्वस्थ लोगों, जिन्होंने योग को अपने जीवन में अपनाया है, रोगों को दूर रखने में सहायक होता है। योगाभ्यास एवं प्राणायाम निशुल्क हैं तथा इनको करने से कोई भी व्यय नहीं होता। अतः यह कहना उचित नहीं कि योग ऐसे व्यक्तियों, जो आर्थिक रूप से समृद्ध नहीं है, के लिए नहीं है। वास्तव में योग समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए लाभकारी है। योग मन की उदासीनता तथा अस्थिरता को दूर करने में अत्यन्त उपयोगी है। मनोचिकित्सा के क्षेत्र में भी योग ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। योग ने विश्व के समस्त देशो में भी समन्वय स्थापित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि योग को जीवन एवं दिनचर्या का नियमित हिस्सा बनाया जाना चाहिए तथा राष्ट्रहित में इसका व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए। अधिक से अधिक लोगो को योग से प्रेरित करते हुए जोड़ने का प्रयास किया जाना चाहिए। ऐसे व्यक्ति जिनके पास समयाभाव है या जिनकी व्यस्त दिनचर्या है, वें भी योग को अपने जीवन शैली का हिस्सा बना सकते हैं। ऐसी अनेकों योग क्रियाएँ हैं जिनको वें अपने कार्य को करते हुए सुगमता से अपना सकते हैं। योग के माध्यम से एक अभियान चलाया जाना चाहिए तथा आने वाली पीढ़ी को स्कूली स्तर से ही उसके लिए प्रेरित करते हुए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।



"वास्तव में इंसान जो कुछ किसी में देखता है, यह वह नहीं होता है जो वह देख रहा होता है, यह वह होता है जो वह वास्तव में देखना चाहता है।"

अमृता प्रीतम

खिचड़ी



ओमप्रकाश
व0 लेखाधिकारी

भारत गांवो में बसता है। ग्रामीण बड़े सीधे सच्चे लोग होते हैं वे शहर के लोगों में बड़ी मुश्किल से घुल मिल पाते हैं। यदि असली हिन्दी का आनन्द लेना है तो गांव के लोगों तथा बच्चों के द्वारा बोली जाने वाली हिन्दी को सुनें। हिन्दी के बिगड़े स्वरूप के दर्शन भी गांवो में हो जाते हैं। हिन्दी भाषी क्षेत्रों में छोटे बच्चे जब बोलना शुरू करते हैं तो वे मम्मी शब्द से शुरू नहीं होते वे तो हिन्दी के मौलिक रूप को अपना कर ही मां शब्द से शुरू होते हैं। छोटे बच्चे को जब प्यास लगती है तो वह अपने समीप वालों से अम की मांग करता है। यदि हिन्दी की डिक्शनरी में ढूंढ़ा जाये तो कहीं ना कहीं अम का अर्थ पानी अवश्य मिलेगा। छोटे बच्चों द्वारा बोली जाने वाली तोतली जबान में हिन्दी का अलग ही आनन्द हैं तथा वह भाषा बड़ी रोचक व मनमोहक होती है।

गांवों में रहने वाले कुछ लोग भी बच्चों की तरह सीधे व सरल होते हैं तथा हिन्दी के शब्दों को अपने अन्दाज में ही प्रयोग करते हैं। ग्रामीणों की हिन्दी के प्रयोग से एक रोचक कहानी याद आ रही है जो कभी मुझे मेरी दादी ने सुनाई थी। पुराने समय की बात है एक ग्रामीण के पेट में दर्द हुआ तथा उसे कई बार शौच जाना पड़ा। दो तीन दिन तक जब यही स्थिति बनी रही तो कुछ बजुर्ग लोगों ने उससे कहा कि शहर जाकर किसी अच्छे डाक्टर/वैद्य को दिखाओ उससे शीघ्र आराम होगा। ग्रामीण शहर गया तथा उसने एक वैद्य को अपना हाल बताया तो वैद्यजी ने कुछ देशी दवाईयां उसे दीं तथा खाने के बारे में हिदायत दी कि ठीक होने तक मूंग की दाल की खिचड़ी व दही के अलावा और कुछ मत खाना। उस व्यक्ति ने सोचा अगर मैं भूल गया तो क्या होगा तब उसने खिचड़ी खिचड़ी कहना शुरू किया तथा अपने गांव की ओर चल दिया। रास्ते में वह खिचड़ी खिचड़ी बोलता जा रहा था। बोलते बोलते उसकी जबान से खिचड़ी खिचड़ी की जगह खाचिड़ी खाचिड़ी निकलने लगा। चलते चलते वह एक ऐसी जगह पहुंचा जहां पर एक किसान अपनी पकी फसल से चिड़ियां उड़ा रहा था। जब किसान से सुना कि यह व्यक्ति कह रहा है खाचिड़ी खाचिड़ी जबकि मैं चिड़ियों को अपनी फसल न खाने के लिए उड़ा रहा हूं। यह सुनकर तथा सोचकर उस किसान को बड़ा गुस्सा आया। उस किसान ने उस व्यक्ति को रोककर कहा भाई तुम्हारी मुझसे क्या दुश्मनी है। मैं तो तुम्हे जानता तक नहीं। मैं अपनी फसल बचाने के लिए चिड़ियां उड़ा रहा हूं और तुम कह रहे हो खा चिड़ी खा चिड़ी। वह व्यक्ति बेचारा भूल ही गया कि वैद्य जी ने क्या खाने की हिदायत दी है। तब उसने उस किसान से कहा भाई भला मेरी आप से क्या दुश्मनी हो सकती है तुम्हीं बताओं मैं क्या कहूं। उड़ चिड़ी, उड़ चिड़ी कहोगे तो मेरी मदद होगी। उस व्यक्ति ने उड़ चिड़ी, उड़ चिड़ी कहना शुरू किया तथा आगे चल पड़ा। कुछ ही दूर चला था कि फिर एक व्यक्ति ने उसे रोककर कहा भाई



मुझसे कब की दुश्मनी निकाल रहे हो मैं तो अपनी रोजी रोटी के लिए चिड़िया पकड़ कर बेचता हूं इस समय मैने जाल बिछा रखा है चिड़िया पकड़ने के लिए और आप कह रहे हैं उड़ चिड़ी, उड़ चिड़ी। उस सीधे सादे व्यक्ति ने देखा कि उससे एक बहेलिया मुखातिब है। उसने पूछा भाई फिर क्या कहूं? तब बहेलिए ने कहा तुम कहो, आते जाओ फंसते जाओ, आते जाओ फंसते जाओ। उस सीधे सादे व्यक्ति ने आते जाओ फंसते जाओ, आते जाओ फंसते जाओ कहना शुरू किया तथा आगे चल दिया वह वैद्यजी की बताई खिचड़ी को बिल्कुल भूल गया। कुछ ही



दूर चला था कि कुछ लोगों ने उसे फिर से रोक लिया तथा कहा तुझे जीना नहीं है क्या। तू कह क्या रहा है? तब उस व्यक्ति ने देखा कि उसके सामने कुछ चोर खड़े हैं तथा बड़े गुस्से में हैं। वे तभी एक बड़ी चोरी करके लौट रहे थे। चोरों ने पूछा तू कह क्या रहा था उसे फिर दोहराओ! तब उस व्यक्ति ने बताया आते जाओ फंसते जाओ, आते जाओ फंसते जाओ कह रहा था। चोरों ने डाँट कर कहा ये शब्द न कह कर कहो हर रोज ऐसा ही हो, हर रोज ऐसा ही हो। इन शब्दों के साथ वह ग्रामीण आगे बढ़ा तथा अगले गांव में पहुंचा तो भीड़ ने उसे यह कहते सुना कि हर रोज ऐसा ही हो, हर रोज ऐसा ही हो और उसे रोक कर बहुत ही बुरा भला कहा तथा उसे ये शब्द कहने से रोक दिया। भीड़ में से किसी ने कहा अरे बेवकूफ तू क्या यह चाहता है कि हर रोज कोई नौजवान मौत की नींद सो जाये तथा उसे उस मृत नौजवान की अरथी की ओर इशारा कर दिखाया। उस ग्रामीण ने मृत नौजवान की ओर देख कर कहा भाई फिर मैं क्या कहूं, भीड़ में से किसी ने कहा कि कहो ऐसा दिन कभी ना आये, ऐसा दिन कभी ना आये।

ऐसा दिन कभी ना आये, ऐसा दिन कभी ना आये कहते हुए वह ग्रामीण अपने गांव के समीप पहुंचा तथा देखा गांव के जमींदार के घर के सामने मिठाइयाँ बंट रही हैं तथा लोग खुशी मना रहे हैं। तभी जमींदार घर से बाहर आया और सुना कि ऐसा दिन कभी ना आये, ऐसा दिन कभी ना आये। यह सुनकर वह जमींदार आग बबूला हो गया। जमीदार के घर में बरसों बाद बेटा पैदा हुआ था उस व्यक्ति के शब्द उसे बड़े अशुभ लगे उसने अपने सेवकों से कहा इस व्यक्ति को पकड़ कर कोड़े मारो जो कह रहा है कि ऐसा दिन कभी ना आये, ऐसा दिन कभी ना आये। सेवकों ने उस ग्रामीण को पकड़ कर बहुत पीटा तथा जब वह बेहोश हो गया तो उसे पास में ही एक तालाब के किनारे फेंक दिया। जब कुछ समय बाद उसे होश आया तो उसने खुद को तालाब के कीचड़ में पड़े पाया। उसने सोचा मैं तो शहर वैद्यजी के पास गया था यहां कैसे आ गया। वैद्य जी ने कुछ खाने के लिए बताया था पर वह क्या था, याद नहीं आ रहा है, शायद इस तालाब में खो गया है। उसने तालाब को खंगालना शुरू किया तथा उसे ऐसा करते लोगों ने देखा तो सोचा कि शायद यह आदमी मछली पकड़ रहा है। कुछ लोगों ने उसका साथ दिया तथा वे भी तालाब के पानी को मथने लगे। उनमें से किसी ने पूछा भाई तुम क्या खोज रहे हो। उस ग्रामीण ने कहा मेरी बहुत कीमती वात यहां खो गयी है उसे ही ढूंढ़ रहा हूं। कई घन्टे गुजर गये तब एक व्यक्ति ने गुस्से में आकर कहा भाई इस तालाब के पानी की हालत ऐसी हो गयी है जैसे खिचड़ी में दही मिलाकर मथ दिया हो पर तुम्हारी बात हाथ नहीं लगी क्या। जैसे ही उस ग्रामीण ने सुना खिचड़ी में दही मिलाकर मथ दिया हो तब उसे याद आया कि अरे यही तो वैद्य जी ने खाने को बताया था कि खिचड़ी में दही मिलाकर खाना। वह तुरन्त तालाब से निकला तथा कहने लगा भाई मेरी बात तो हाथ आ गयी है खिचड़ी खिचड़ी कहते अपने घर की भाग खड़ा हुआ।

इस कहानी से महसूस होता है कि गांव के लोग कितने सीधे सच्चे होते हैं। वे भी बच्चों की तरह सीधे सच्चे तथा मासूम होते हैं।

यह कहानी मैने बचपन में किसी से सुनी थी। मैं यह नहीं जानता कि इसका असली रचनाकार कौन है। सुनाने वाले ने भी किसी से यह कहानी सुनी होगी। यह क्रम ऐसे चलता रहेगा तो इस कहानी के असली रचनाकार को इसी प्रकार याद किया जाता रहेगा।

"आस्था वो पक्षी है जो सुबह अंधेरा होने पर भी
उजाले को महसूस करती है।"

रविन्द्रनाथ टैगोर

संगम



यहाँ
त्रिवेणी का
संगम है,
लोग दूर–दूर से
पापों की गठरी
लेकर आते हैं ।
इसलिए
भीड़ का ये
भारी भरकम है।
छोटे–बड़े सब
नहाकर
पापों को दूर करना
करना चाहते है।
मानो
मन की सांत्वनाओं
के लिए
पापों की गठरी
उतार कर जाते है,
फिर भी
साधु–सन्त
पाखण्ड का
पिटारा खोले
वैठे है,
संगम तीरे
यहाँ तो
किसी का
मिलन या जुदाई
का चिंतन है।

इस
किनारे
सब कुछ
दिखता है,
अच्छा, बुरा,
नंगा, लंगड़ा, लूला
सभी तो
नहाते हैं,
बोझ
मन का
हल्का करते है।
लोग
संगम तीरे
श्रद्धा लेकर आते हैं।
साथ में
गाली–गलौच,
धक्का–मुक्की
का
प्रसाद
खाकर जाते हैं।
यहाँ तो
संगम है।



एस.एस. तोमर
व0 लेखाकार

काश ऐसा संसार हो



अमित तोमर
डी.ई.ओ.

काश ऐसा संसार हो
काश ऐसी कोई बस्ती हो
दोस्ती नाम की कश्ती हो
ना मंहगी ना सस्ती हो
उसका कोई मोल न हो
वो हमारे लिए अनमोल हो
दया नाम का गीत हो
आदर नाम का संगीत हो
प्यार नाम की रीत हो
उसका कोई मोल न हो
वो हमारे लिए अनमोल हो

सम्मान नाम का नारा हो
मानव–मानव को प्यार हो
उसका कोई मोल न हो
धर्म नाम का मेल हो
कोई प्राणी कभी अकेला न हो
कष्ट नाम का रोग न हो
सुखों मे जिसका निवारण हो
काश! ऐसा संसार हो।



"एक मात्र ईश्वर, आत्मा और अध्यात्मिकता ही सत्य है, शक्ति है, शक्ति स्वरूप है, केवल उन्हीं का आश्रय लो।"
स्वामी विवेकानन्द

रोशनी



दीपा पंवार
क0 अनुवादक

सिरहाने रखे ख्वाबा सरकने लगे हैं,
काले बादल कुछ छंटने लगे हैं।
सपने सुनहरे फीके लगने लगे थे,
सपने सुहाने अब लगने लगे हैं।

उड़ने लगा मन पंछी सा बनकर,
अरमां भी अब ये उमड़ने लगे हैं।
कंटीली राहें डराती थीं कल तक,
रस्ते मेरे साथ अब चलने लगे हैं।

दबे पांव आया मुकद्दर लेके खुशियां,
गले लग के सब गुनगुनाने लगे हैं।
नमी निगाहों की बन के खुशबू उड़ी यूं,
कि बारिश के रंग अब भिगोने लगे हैं।

गमों को गुमाँ खुद पे होगा तो होगा,
ये स्याही के धब्बे अब धुलने लगे हैं।
जलता रहे दीया उम्मीदों का मेरी,
अंधेरों से आंखें "दीप" मिलाने लगे हैं।

शहादत



प्रशांत जोशी
लेखाकार

हम वीरों की शहादत को प्रणाम करते हैं।
हम वीरों की शहादत को सलाम करते हैं।
जो देश के लिये अपने प्राण बलिदान करते हैं।
हम उनकी शहादतों को सलाम करते हैं।
देश की रक्षा का सच्चा दायित्व निभाते हैं।
देश के लिये दिन–रात सरहदों पर बिताते हैं।
युद्ध में अद्भुत पराक्रम शौर्य दिखाते हैं।

"शहादत कुछ खत्म नहीं करती,
वह तो महज शुरुआत है।"
इन्दिरा गांधी

बढ़ते कदम



पूजा त्रिपाठी
(पत्नी श्री नवीन त्रिपाठी)
स0 लेखाधिकारी

पकड़ के तेरी उंगली मैं, सीख रही हूँ चलना माँ
डर लगता है गिर न जाऊँ, भर लो अपनी बाँहों में
साथ तू मेरा देना चलना है, अनजानी राहों में
पकड़ के तेरी उंगली मैं, सीख रही हूँ चलना माँ
बढ़ते कदमों से सौ बार गिरूँ–उठूँ धैर्य न खोना
भर आती आंखें इक पल को हो जाती ओझल
पकड़ के तेरी उंगली मैं, सीख रही हूँ चलना माँ
मन हो रहा प्रफुल्लित नई–नई चीजें छूने को
खुशी मिल गई इतनी भर ली दुनियाँ, नन्ही मुट्ठी में
पकड़ के तेरी उंगली मैं, सीख रही हूँ चलना माँ
जब तू देती शाबासी बढ़ जाता उत्साह मेरा,
गर साथ रहा तेरा माँ मीलों आगे बढ़ती जाऊंगी
पकड़ के तेरी उंगली मैं, सीख रही हूँ चलना माँ।



"प्रेम अधिकार का दावा नहीं करता,
बल्कि स्वतन्त्रता देता है।"
रविन्द्रनाथ टैगोर

तपोभूमि है, बद्रीनाथ धाम



बृजभूषण सेमवाल
लेखाकार



देवभूमि उत्तराखण्ड राज्य के चमोली जिले में हिम से ढके पर्वत तथा मन को आनन्दित करने वाली ठंडी–ठंडी हवा मन रोमांचित करने वाली प्रकृतिक सौंदर्य छटा तथा कल–कल करती हुई अलकनन्दा नदी बहती है। अलकनन्दा के दक्षिण तट पर स्थित है भगवान श्री बद्री विशाल जी का मन्दिर।

बद्रीनाथ के नाम से प्रसिद्ध श्री बद्री नारायण जी के सानिध्य में पहुंचकर मन की सारी मलिनता दूर हो जाती है। मन अत्यंत आनन्द को प्राप्त कर भक्ति में लीन हो जाता है। बद्रीनाथ जी की मूर्ति विविध सोने चांदी आभूषणों से विभूषित है। यह मन्दिर आदि गुरू शंकराचार्य द्वारा चारों धाम में एक के रूप में स्थापित किया गया। यह मन्दिर तीन भागों में विभाजित है, गर्भ गृह, दर्शन मण्डप और सभा मण्डप मंदिर में भगवान बद्री विशाल जी दिव्य मंजुल मूर्ति श्यामल स्वरूप में वहुमूल्य वस्त्राभूषण एवं विचित्र मुकुट धारण किये शोभायमान हो रही हैं इनके ललाट पर हीरा लगा हुआ है। अगल–बगल नर–नारायण, उद्धव, कुबेर व लक्ष्मी नारद की मूर्तियां हैं। परिक्रमा में हनुमान, गणेश, लक्ष्मी और कर्ण आदि मूर्तियां है। लक्ष्मी मन्दिर के बगल में भोगमण्डी है। जहां भगवान का भोग पकता है। भोग लगाने के बाद प्रसाद बांटा जाता है। मंदिर के पीछे की तरफ धर्मशिला नामक एक शिला हैं। बांई ओर एक कुण्ड है। उत्तर के ओर एक कोठरी में पुरी के रक्षक घंटाकरण भी है। गरूड़ जी की पाषाण मूर्ति विराजमान है। मंदिर बद्री नारायण के पांच स्वरूपों की पूजा अर्चना होती हैं सुबह में भगवान विष्णु जी का महाभिषेक होता है, इसके बाद बाल भोग (खीर) लगता है। श्रीमद्भागवत पाठ, गीता पाठ होता है। दोपहर में महाभोग लगाया जाता है। सांयकाल में विशेष पूजायें होती हैं। रात्रि में भोग लगाकर शयन आरती होती है। तत्पश्चात् मंदिर बन्द हो जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार नीलकंठ पर्वत के समीप भगवान विष्णु जी ने बाल रूप में अवतरण लिया था। यह स्थान पहले शिव भूमि (केदारभूमि) थी। भगवान विष्णु जी को यह स्थान भा गया। चरण स्थल पर (नीलकंठ पर्वत के समीप) ऋषि गंगा और अलकनंदा नदी के संगम के समीप बाल रूप में अवतरण किया और रूदन करने लगे। पार्वती मां उनका रूदन सुनकर उनके समीप गई। माता ने पूछा कि बालक तुम्हें क्या चाहिये तो वालक ने ध्यान योग करने के लिये वह स्थान मांग लिया। इस तरह से रूप वदलकर भगवान विष्णु ने शिव पार्वती से यह स्थान अपने ध्यानयोग हेतु प्राप्त कर लिया। यही पवित्र स्थान आज वद्रीनाथ के नाम से प्रसिद्ध है।

कहा जाता है कि जब भगवान विष्णु योग मुद्रा में तपस्या में लीन थे, बहुत हिमपात होने लगा। विष्णु जी हिम में पूरी तरह डूब चुके थे। उनकी ये दशा देखकर माता लक्ष्मी जी ने भगवान विष्णु जी समीप खड़े होकर एक बेर (बदरी) के वृक्ष का रूप ले लिया और समस्त हिम को उपर सहने लगी। माता जी भगवान विष्णु को धूप वर्षा और हिम से बचाने की कठोर तपस्या में जुट गयी। वर्षों बाद जब विष्णु जी का तप पूर्ण किया तो देखा कि लक्ष्मी जी हिम से ढकी थी। तब विष्णु जी ने मां का तप देखकर कहा कि हे देवी आपने भी मेरे ही बराबर तप किया

है। आज से इस पवित्र धाम में मुझे तुम्हारे ही साथ पूजा जायेगा। तुमने मेरी रक्षा बदरी वृक्ष के रूप में की है सो आज से बदरी के नाथ बद्रीनाथ के नाम से जाना जायेगा। भगवान विष्णु का नाम बदरीनाथ पड़ा।

बद्रीनाथ के दर्शनीय स्थल

1. **तप्त कुंड–** जहां भगवान विष्णु जी ने तप किया था वह स्थान अलकनंदा के तट पर यह पवित्र गर्म जलकुंड है। आज भी हर मौसम में गर्म पानी निकलता है।

2. **प्रहलाद धारा–** तप्तकुंड के समीप प्रहलाद धारा है।

3. **कूर्म धारा–** प्रहलाद धारा के समीप कूर्म धारा है जो शीतल है।

4. **कुण्ड–** यहां नारदकुण्ड, ब्रहमाकुण्ड, गौरीकुण्ड, सूर्य कुण्ड है।

5. **पंचशिला–** नारद शिला, वराह शिला, नृसिंह शिला, गरूड़ शिला और मार्कण्डेय शिला है। ये तप्तकुण्ड के ऊपर है। जो यात्री केदारनाथ नहीं जा सकते हैं वे प्रथम दर्शन करके बद्रीनाथ के दर्शन कर सकते है।

6. **ब्रहमकपाल–** जब ब्रह्मा जी अपनी पुत्री संध्या पर आसक्त हुए तब शिवजी क्रोधित हो गये और ब्रह्मा जी का एक सिर काट दिया तभी ब्रहम हत्या से सिर शिवजी के हाथ में चिपक गया और उसको छुड़ाने के लिये सभी तीर्थो में गये, लेकिन छूट नहीं पाया। तब बद्रीनाथ में जाकर वह कपाल शिवजी के हाथ से छूकर अलकनन्दा के समीप गिर पड़ा। यही स्थान ब्रहमकपाल के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पर पितरों को पिण्डदान दिया जाता है जिससे उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

7. **वसुधारा–** यह स्थान बद्रीनाथ से 8 किमी की दूरी पर है। यहाँ पर 800 फीट की ऊँचाई से झरना गिरता है। जो पापी मनुष्य होता है, उस पर धारा की एक बूंद भी नहीं गिरती है।

8. **माता मूर्ति–** बद्रीनाथ से तीन किलोमीटर की दूरी पर माता मूर्ति का मन्दिर है। यहाँ बद्रीनाथ जी की माता जी की मूर्ति है। वामन द्वादशी को यहाँ भव्य मेला लगता है।

9. **शेष नेत्र–** पूरी में नर पर्वत शेष नेत्र है। जहाँ एक शिला में शेष जी की आँखें स्पष्ट दिखाई देती हैं।

10. **चरण पादुका–** पश्चिमी और ऊँचे टीले पर चरण पादुका के निशान हैं।

11. **सतोपंथ–** यहाँ बर्फ के जल का स्वच्छ सरोवर है। यह 14440 फीट की ऊँचाई पर है। स्वर्गारोहिणी भी कहा जाता है। राजा युधिष्ठिर इसी मार्ग से स्वर्ग गए थे।

12. **अलकापुरी–** श्री बद्रीनाथ से सतोपंथ जाने के मार्ग से लक्ष्मीभवन के समीप अलकापुरी है। यहाँ सतोपंथ व भागीरथ खड्ग ग्लेशियर मिलते हैं। यही अलकनन्दा का उद्गम स्थान है।

13. **माणा गाँव–** इसे भारत का अंतिम गाँव भी कहा जाता है।

14. **भीम पुल–** भीम ने सरस्वती नदी को पार करने के लिये एक भारी चट्टान को नदी के ऊपर रखा जिसे भीम पुल के नाम से जाना जाता है।

15. **वेद व्यास गुफा, गणेश गुफा–** यही पर वेद और उपनिषदों का लेखन कार्य हुआ।

16. **सरस्वती नदी–** माणा गाँव में ही यह नदी प्रकट हुई थी।

17. **लक्ष्मी वन–** यह वन लक्ष्मी माता के वन के नाम से प्रसिद्ध है।

बद्रीनाथ में भगवान विष्णु जी के दर्शन करने से मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। उसे बार–बार जन्म लेना नहीं पड़ता है। धाम में तप करने से भगवान् वद्री नारायण के साक्षात दर्शन होते है। उसके सारे पाप नष्ट हो जाते है। जो भगवान विष्णु जी को पंचगव्य से स्नान कराकर वस्त्र भूषण भेंट करता है, वह सदा विष्णु लोक को प्राप्त करता है। जो नैवेद्य अर्पण करता है, वह किसी राज्य का अधिकारी तथा जो अखंड

दीपदान करता है वह बड़ा भाग्यवान होता है। जो बद्रीनाथ धाम विष्णु जी की परिक्रमा करता है उसे पृथ्वी दान का फल मिलता है। जो बद्रीनाथ के एक–एक पग चलता है उसे अश्वमेध का फल होता है। जो मनुष्य भगवान विष्णु जी का चरणामृत पीता है, उसे तीन बार पीता है उसे तीन लोकों के दर्शन हो जाते है तथा वह देवपूज्य हो जाता है। जीवन में मनुष्य को चार धामों के दर्शन करने चाहिए उनमें एक बद्रीनाथ धाम भी है। मनुष्य इस मोह माया के जाल से मुक्त हो कर मन की शांति प्राप्ति होती है। बड़े–बड़े साधु संत तो जीवन भर यही साधना करते है। अगर किसी मनुष्य को आर्थिक तंगी होती है तो यहाँ के दर्शन से ही आर्थिक स्थिति अच्छी हो जाती है। जो अपने मन में कोई कामना ले कर आता है, वही खुशी–खुशी अपने घर जाता है। बड़े–बड़े उद्योगपति, फिल्म अभिनेता तथा नेता तथा देशी–विदेशी हर साल (वर्ष) बाबा बद्रीनाथ में विष्णु जी के दर्शन करता है तो उसके मन में शांति, आनंद की अनुभूति होती है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

मनुष्य को जीवन में जब समय मिले तो अवश्य एक बार दर्शन करके आयें, उन्हें जीवन का अर्थ समझ में आ जायेगा। मनुष्य का जीवन धन्य होकर स्वर्ग लोक प्राप्त कर लेगा। बद्रीनाथ धाम सड़क मार्ग, ऋषिकेश तक रेलमार्ग तथा वायुमार्ग से दर्शन करने पहुँच सकते है। यहाँ जगह–जगह पर रहने व खाने की उचित व्यवस्था हैं।

बेबस दिल...



शिवम लिल्हौरी
लिपिक

उनकी एक झलक में खुश होता था,
पर नजरें इनायत को तरसता था दिल।
कहना चाहता था उनसे सब कुछ,
बयान न कर पायाए बेजुबान यह दिल।
ख्वाबों ख्यालों में रोज होती थी मुलाकातें,
उनके सामने आते ही शरमाता था दिल।
हाँ में हाँ मिलाता था उनकी हर एक बात पे,
शायद न सुनने से कतराता था दिल।

बेबाक हो कर दिया इज़हार एक रोज़,
जैसे फ़ना होने पे अमादा हो दिल।
शरमाते सकुचाते जब हुये वो पहलूनशीं,
उस दिन मंजिल–ए–सुकून पा गया दिल।
कभी सीने से लगाताए कभी आँखों में बसाता,
उस पल बेहद बेतकल्लुफ हो चला दिल।
कभी भीगने से जो रहता था खौफजदा,
साथ उनके बारिश के कतरों में झूम उठा दिल।

खुसफुसाती रातें सुगबुगाती हो गई,
उनके जाने के बाद बेहद तन्हा है दिल।
सीने से उनके अक्स को लगाता,
कभी आँखों का नूर ढुढ़ता है दिल।
किस्सा–ए–जुनून को हकीकत में बदलने को तरसता था,
आज हकीकत से ही मुँह मोड़ता है दिल।
बीते कल में जीते हुये आज कटता है,
कैसे समझाएं कि उनके लिये बहुत तड़पता है दिल।



मां वैष्णो देवी की यात्रा वृत्तांत





महावीर सिंह रावत
स0 लेखाधिकारी

''जय माता दी'' मेरी हार्दिक इच्छा थी कि एक बार मां वैष्णों देवी के दर पर जाकर अपना शीश मां के चरणों में झुकाऊँ, माँ की चरणरज की धूली से अपने माथे को सजाऊँ, माँ दयालु है माँ ने मेरी विनती स्वीकारी, माँ ने बुलाया और कदम उस ओर चल दिये, जब तक माँ का बुलावा नहीं आया था तब तक मन में कितनी भी अभिलाषा रहें वह साकार रूप धारण नहीं करती है। जब बुलावा आता है तो अनायास ही सब कुछ ठीक–ठाक लगने लगता है। माँ अपने भक्तों को अपने भवन की ओर खींचे ले आती है। जो कुछ जीवन में घटता है वह सब कुछ उस परम शक्ति के हाथों में विद्यमान है। यह शरीर हमारा क्षणभंगुर है जो आज है तो कल नहीं है। यह आदिशक्ति की सत्ता है जो कल भी थी आज भी है और कल भी रहेगी, युगो–युगान्तर तक कायम रहेगी। हमारी यह काया पानी के बुलबुले के समान है, इस वुलबुले पर हमें अभिमान नहीं करना चाहिए।

24 जून 2017 को उत्तराखण्ड परिवहन निगम की वाल्वो बस द्वारा मैने अपनी पत्नी के साथ देहरादून से कटरा के लिए प्रस्थान किया। यह वस सेवा शाम 6 वजे देहरादून से कटरा के लिए प्रस्थान करती है और अगले दिन सुवह 6:30 बजें के करीव अपने गंतव्य कटरा पहुंच जाती है। देहरादून से ही सारी सीटे भर चुकी थी क्योकि 26 जून को ईद थी इसलिए बस में कश्मीरी छात्र जो देहरादून में उच्च शिक्षा ग्रहण करते है अधिक थे, जो ईद मनाने के लिए अपने–अपने घरों को जा रहे थे। जम्मू में सारी बस खाली हो चुकी थी, जम्मू से कटरा तक के केवल दो यात्री हम ही थे, जम्मू से कटरा की दूरी 35 किमी. होगी, जम्मू तक तो मै गहरी नींद में सोया रहा परन्तु जम्मू से आगे जब बस चल पड़ी तो एक उल्लास और उमंग मन में जागृत हो गया कि यहां प्रकृति का नजारा कैसा होगा जिसको अपनी आंखों में कैद कर लिया जाए। जम्मू से आगे छोटे–छोटे टीले–पहाडियां शुरू हो गई थी। यह पहाड़ियां हरियाली का भरपूर आनन्द दे रही थी, जिससे आंखों को सकून मिल रहा था। जम्मू से 8 किमी. दूरी पर जम्मू–श्रीनगर नेशनल हाइवे पर जब बस पहुँची तो फोर लेन हाइवे पर पुल और सुरंगे देखकर आंखे चकाचौंध हो गई, जहां पहले जम्मू से श्रीनगर की दूरी 289 किमी. पिलर बता रहा था वह दूरी सिमटकर 228 किमी. हो गई थी। मन में एक विचार उमड़ पड़ा काश कश्मीर घाटी शान्त होती तो वहां की प्राकृतिक छटा से भी अभिभूत हो लेते, परन्तु अशान्त क्षेत्र होने के कारण यह अनुभूति साकार रूप नहीं ले पायी। इसी विचार में कि वह दिन अवश्य आयेगा जब घाटी में अमन–चैन बहाल होगा लोग घाटी में बेखौफ आ–जा सकेंगे। यह राष्ट्र के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए इस चुनौती को हम सभी भारतीयों को स्वीकार करना होगा।

साढ़े छः बजे के करीब हम कटरा पहुंच गये, वहां हमने होटल में एक कमरा 2–3 घंटे के लिए किराये पर लिया जिसका किराया 500 रू था। नहा–धोकर रास्ते की सारी थकान दूर हो चुकी थी। अपना कुछ सामान हमनें होटल में ही रखवा लिया था। 9 बजें के करीब यात्रा पंजीकरण के लिए कतार में लग गये। एक घंटे में पंजीकरण हो चुका था। माँ वैष्णों देवी तीर्थयात्रियों का पंजीकरण कराना आवश्यक है बिना पंजीकरण किये माँ के दर्शन सम्भव नहीं हैं। यह पंजीकरण कटरा में होता है। पंजीकरण होने के बाद माँ के जयकारे के साथ आगे वढ़े, यहां से 1 किमी. आगे दर्शनी दरवाजा है वहां भी कतार में लग गये यहां पर केन्द्रीय सुरक्षा वल के जवान हर यात्री की सुरक्षा की दृष्टि से जांच करते है तथा पंजीकरण पत्र का निरीक्षण भी करतें है, यह तीर्थ यात्रियों की सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यक भी है। दर्शनी दरवाजा पार करते ही घोडे–खच्चर व पालकी वाले यहां पर मिल जाते है जो तीर्थ यात्री पैदल चलने में असमर्थ है वे यहां से घोड़े–खच्चर व पालकी से

अपनी यात्रा शुरू करते हैं। घोड़े–खच्चर यहां से आदिकुमारी तक ही जाते है जिसकी दूरी करीब 6 किमी. है, इससे आगे घोड़े–खच्चर प्रतिबंधित है, कटरा से मां वैष्णों देवी तक हेलीकाप्टर सेवा भी है जिसका किराया 1077 रू प्रति यात्री है। घोड़े–खच्चर व पालकी का भाड़ा भी माँ वैष्णों देवी श्राईन बोर्ड द्वारा निर्धारित हैं। दर्शनी दरवाजे से 1/2 किमी. दूरी पर बाणगंगा हैं। जिसको पार करते ही त्रिकूट पर्वत के आधार बिन्दु पर तीर्थयात्री पहुंच जाते है। यहां से कुछ दूरी पर एक कुण्ड है जहां पर तीर्थयात्री स्नान करते हैं। कहा जाता है कि जब माँ त्रिकूट पर्वत के निकल पड़ी तो उनके साथ लागूर वीर भी था जिसे यहां पर प्यास लगी। माँ ने पत्थरों पर तीर मारा तो एक जल धारा फूट पड़ी जिससे लागूर वीर ने अपनी प्यास वुझायी। कहतें है माँ ने यहां पर अपने केश भी धोये थे। यहां से कुछ दूरी पर चरण पादुका मंदिर है। यहां पर मां के चरण चिन्हों के निशान है। अतः यात्री यहां पर माँ के चरणों के दर्शन करते है। हम भी माँ के जयकारे के साथ धीरे–धीरे कहीं पर सीढ़ियों के रास्ते तो कहीं पर घुमावदार रास्ते से आदिकुमारी की ओर चल दिये। चढ़ाई अधिक होने के कारण रास्ते में बीच–बीच में विश्राम भी करते रहे। 12 बजें के करीब हम आदिकुमारी पहुंच चुके थे। यहां पर आधा घंटा विश्राम करने के बाद खाना खाया। माँ वैष्णों देवी श्राईन बोर्ड द्वारा निर्धारित दरों पर जगह–जगह पर खाने–पीने की चीजें उपलब्ध है। तीर्थ यात्रियों के साथ लूट–खसुट की कोई गुंजाइश नहीं है। रास्ते में जगह–जगह पर प्याऊ हैं, सुलभ शौचालय हैं, जो साफ–सुथरे है। हर समय इन सुलभ शौचालयों की साफ–सफाई का बहुत ध्यान रखा जाता है। इन सबका प्रबंधन मां वैष्णों देवी श्राईन बोर्ड द्वारा किया जाता है जो काबिले तारीफ है। कहा जाता है कि यहां पर माँ वैष्णों देवी ने गुफा में नौ मास तपस्या की थी इस गुफा को गर्भजून भी कहा जाता है। यहां पर आदिकुमारी का भव्य मंदिर है, यात्री छोटे–छोटे समूह में गर्भजून गुफा का दर्शन करते हैं। यहां पर मंदिर का प्रांगण बहुत बड़ा है तथा धर्मशालायें भी है। तीर्थ यात्री रात्रि विश्राम यहां पर करते है।

आदिकुमारी से विश्राम के बाद मां के जयकारे के साथ जैसे ही आगे बढ़े एक भली महिला जो मां के दर्शन करके लौट रही थी, उसने कहा यह चढ़ाई वाला रास्ता है आप लोग आदिकुमारी मंदिर के बांयी तरफ से माँ के भवन को जाओ। हमारी तरह कई तीर्थ यात्री थे जो पहली बार माँ के दर्शन करने जा रहें थे हम सभी यात्रियों ने उस महिला का कहना माना और मंदिर के वांऐ तरफ से माँ भगवती के भवन की ओर चल पडें। यह हल्की चढ़ाई वाला तथा सीधा रास्ता है यह घुमावदार नहीं है। 3 बजें के करीब माँ के भवन के समीप पहुंच चुके थे। माँ के भवन के दर्शन से मन गदगद हो चुका था। यहां फिर कतार में लगकर प्रसाद लिया और जयकारे के साथ आगे बढ़े। तीन नम्बर गेट से आगे अपना सामान जैसे जूते, मोबाईल, कैमरा इत्यादि नहीं ले जा सकते है तथा यहां से आगे सामान जमा करने के लिये लॉकर नहीं है। अतः यहां पर कतार में लगकर अपने सामान लॉकर में जमा किया। इस काम में दो घंटे लग गये तब तक शाम के 6 बज चुके थे।

सुबह और शाम 6 बजें से 9 बजें तक माँ की पूजा आरती का समय है इसलिए यह अवधि दर्शनार्थियोंके लिये निषेध रहती है, हम भी माँ के दर्शनो के लिए कतार में खडे हो गये रात 11 बजें के करीब माँ का दर्शन पाकर मन अभिभूत हो गया, माँ को शत–शत नमन किया। वापस आकर लॉकर से अपना सामान लिया तब तक रात के 11:30 वज चुके थे। रास्ते की थकावट तथा जगह–जगह कतार में खड़े होने से हम थक चुके थे इसलिए रात्रि विश्राम का इरादा वही का वनाया। धर्मशाला में कम्बल लेने के लिये कतार में खड़ा हो गया। परन्तु जब मेरा नम्बर आया तो सब कम्बल बंट चुके थे। माँ के दर पर निराश नही होना चाहिए उसको भी माँ का प्रसाद समझ हृदय से ग्रहण किया। देर रात होने के कारण नींद से आँखें, मदहोश हो रही थी। बाबा भैरवनाथ के दर्शन किये बगैर ही हम आदिकुमारी की ओर चल दिये। आदिकुमारी मां के भवन से 6 किमी. दूर है। 1 बजें के करीब हम आदिकुमारी पहुचं चुके थे वहां पर धर्मशाला में कम्बल लिए और रात्रि विश्राम किया। हजारों की संख्या में यहां पर तीर्थ यात्री विश्राम करते है। मां वैष्णों देवी श्राईन बोर्ड की ऐसी व्यवस्था से मन को अति प्रसन्नता प्राप्त हुई। इस व्यवस्था की जितनी तारीफ की जाए वह कम है। यहां कहीं पर भी आपको पुजारियों को नकदी नहीं देनी पड़ती है। पुजारियों–पंडितों को नकदी देना निषेध है। श्रद्धालु अपनी श्रद्धाके अनुसार दान को दानपात्रों में डाल सकते है। श्रद्धालुओं की जेब ढ़ीली होने की गुंजाइश नहीं है। कम्बल जो रात्रि विश्राम के लिए हैं, प्रति कम्बल सौ रूपया जमा किया जाता है। जो सुबह रसीद दिखाने पर वापस मिल जाता है। हर तरफ से यह प्रतीत होता है कि माँ वैष्णों देवी के दर्शन निशुल्क हैं। इसके लिए माँ वैष्णों देवी श्राईन बोर्ड बहुत–बहुत बधाई का पात्र है।

मेरे मन में यह विचार उठता है कि उत्तराखण्ड राज्य, जो कि देवभूमि के नाम से जग प्रसिद्ध है, चार धाम यात्रा पर लाखों तीथयात्री प्रति वर्ष आते हैं। जम्मू कश्मीर सरकार की तर्ज पर क्यों नही उत्तराखण्ड सरकार तीर्थ यात्रियों की सहूलियत के लिए ऐसे बोर्ड की स्थापना कर सकती है। आशा करता हूँ उत्तराखण्ड सरकार तीर्थयात्रियों की सहूलियत के लिए कुछ कदम उठायेगी, जो उत्तराखण्ड राज्य में तीर्थाटन को बढ़ावा देगा।

जय माता दी।

बदली सी बयार



भास्करानन्द त्रिपाठी
स0 लेखाधिकारी

मुद्दतों बाद,
आज हमने
एक बदली सी बयार देखी।
भ्रष्टाचार की.....
दरकती हुई दीवार देखी।
वर्षों से,
नहाये जा रहे हो जो,
किसी और के हमाम में,
भीगे हुए बगुलों की
लम्बी सी कतार देखी।
जिसे अपनी ताकत का भरोसा था
सहम कर पीछे हटते देखा
निवाला किसी गरीब का
निगल चुका था जो
उसी निवाले को
उगलते देखा।
तपते हुये, बियावान में
हल्की सी फुँहार देखी
मुरझाये हुए चेहरों पर
झरती हुयी बयार देखी।
मुद्दतों बाद आज हमनें
एक बदली सी बयार देखी।



"मन में धीरज रखने से सब कुछ होता है।
अगर कोई माली किसी पेड़ को सौ घड़े पानी से
सींचने लगे, तब भी फल तो ऋतु आने पर ही लगेगा।"
संत कबीर

एक बार फिर...



शिवम लिल्हौरी
लिपिक

हँसता खेलता तो कभी माँ के आँचल में छुपता बचपन,
छज्जे पे इठलाता तो कभी आँगन में इतराता बचपन,
गलियों में रुठते मनाते हुये झुंझलाता बचपन,
डालियों पे झूलते हुये, तितलियाँ पकड़ता बचपन,
दिन भर चहकता फुदकता तो रात में चैंन की बंसी बजाता बचपन,
आहिस्ता–आहिस्ता दूर हो चला, भूल चले हम जिसे, वो बचपन.....

बड़े हुये तो रिश्तों, अहसानों के फेर में उलझे हम बेचारे,
जिम्मेदारियों को निभाते शहर–शहर फिरतें भवरें हम आवारे,
जिदंगी की जद्दोजहद में ना जानें कब बन गयें हम बंजारें,
एक बार फिर रुबरु हुये जब उससे, थम गये कदम, बदल गये नजारे.....

तपती धूप में थके हारे राहगीर से जैसे ठंडा झोंका टकराया,
छलकती आँखों से, उसे गोद में लिये मैं भरमाया,
टूट चुका था नाता जिससे, उस मासूमियत से उसने पुकारा,
नन्हे–नन्हें हाथों से दस्तक देता वो प्यारा,
लौट आया फिर से बचपन न्यारा.....

भूल चुके थे जिस प्राकृतिक सौंदर्य को उसपे ध्यान लगवाया,
रंगो के रंगीन संसार से फिर परिचय करवाया,
सुगंधित पुष्पों, पक्षियों का कलरव फिर समझाया,
बेमौसम बारिश की फुहारों में लट्टू बन नचवाया,
दीन–दुनिया को देखने का नजरिया बदलवाया,
पिंजरें से निकल कर जैसे मेरे मन का पंछी फड़फड़ाया,
नन्हीं सान्वी प्रिया ने खोये बचपन से वापस मिलवाया.....



"सच्ची प्रतिष्ठा और सम्मान के लिए
संपत्ति की जरूरत नहीं,
उसके लिए त्याग व सेवा काफी है।"
मुंशी प्रेमचन्द

चींटियों को पहले ही चल जाता है

भूकंप का पता



अमित तोमर
डी.ई.ओ.

अभी तक भूकंप की भविष्यवाणी करना असंभव है, लेकिन नन्हीं सी चींटी को इसका आभास हो जाता है और वह भी भूकंप आने के एक दिन पहले। शोधकर्ताओं ने पाया कि रेडवुड चींटियां भूकंप के दौरान पड़ी दरारों में अपनी बस्तियां बसाती है। अध्ययन में उन्होंने देखा कि भूकंप आने से एक दिन पहले चींटियों के व्यवहार में काफी बदलाव आ जाता है और भूकंप के एक दिन बाद वे पहले की तरह सामान्य हो जाती है। लाइव साइंस की रिपोर्ट के मुताबिक चींटियों की हर विशेषता को जानने के लिए जर्मनी यूनिवर्सिटी डिसवर्ग एसेन के गैब्रियल बरबेरिक ने चींटियों के 15 हजार से ज्यादा टिल्लो का अध्ययन किया। बरबेरिक और उनके सहयोगियों ने करीब तीन साल तक वीडियों कैंमरे की मदद से चींटियों पर नजर बनाए रखी ओर एक विशेष साफ्टवेयर के इस्तेमाल से उनकी गतिविधियों का अध्ययन किया गया। शोधकर्ताओं का कहना है कि भूकंप की तीव्रता अधिक होने पर ही चींटियों का व्यवहार बदलती है। बरबेरिक कहते है कि भूकंप आने से एक दिन पहले चींटियां रात भर अपने टिल्ले के बाहर जागती रहती है जबकि आम दिनों में वह दिन भर काम करने के बाद रात को सो जाती है शोधकर्ताओं का कहना है कि चींटियों को उस दौरान जमीन में उठने वाली गैसों और हलचलों से भूकंप का अंदाजा हो जाता है।



उलझे धागे

कंकर मत मारो
इस शान्त समुन्दर में,
ज्वार उफन आयेगा.....
हंसती खेलती जिन्दगी को
पल भर में लील जायेगा।

चिन्गारी मत फेंको
सूखे फानूस के ढ़ेर में
आग की लपटों में बदल जायेगा
जो तुमने जोड़ा था
अथक प्रयासों से
सब कुछ खाक हो जायेगा।

और न उलझाओं.....
इन उलझे हुए धागों को
सख्त गाँठें पड़ जायेंगी
हो सके तो सुलझा लो
सख्त रस्सियाँ बन जायेंगी।

उपवन तभी महकता है
जब फूलों के रंग अनेक हों
देश आगे–आगे बढ़ता है
जब सबके इरादे नेक हों
इधर कीर्तन हो उधर नमाज हो
विविधता भरा, अपना समाज हो।



भास्करानन्द त्रिपाठी
स0 लेखाधिकारी

"सिर्फ खड़े होकर पानी देखने से
आप नदी नहीं पार कर सकते।"
रविन्द्रनाथ टैगोर

परीक्षाओं में उच्च अंक प्राप्त करने वाले होनहार छात्र



वर्ष 2016–17 शैक्षिक सत्र के दौरान हाईस्कूल/इंटरमीडिएट परीक्षाओं में उच्च अंक प्राप्त करने वाले होनहार छात्र/छात्राओं का संक्षिप्त विवरण-

बोर्ड–सीबीएसई (कक्षा 12वीं) 2017



दीपक धीमान

विद्यालय	जी.आर.डी एकेडमीए निरंजनपुर, देहरादून
छात्र का नाम	**दीपक धीमान**
पिता का नाम	दिनेश कुमार, स0 लेखाधिकारी
माता का नाम	कविता
अंक प्राप्त किए (प्रतिशत में) : 75%	

बोर्ड –आईसीएसई (कक्षा 10वीं) 2017



सिमरन

विद्यालय	इंडियन अकादमी जोगीवाला नेहरूग्राम देहरादून
छात्र का नाम	**सिमरन**
पिता का नाम	दिनेश चन्द, व0 लेखाकार
माता का नाम	उषा देवी
अंक प्राप्त किए (प्रतिशत में) : 95%	

"सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो सूरज की तरह जलना भी होगा।"

ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

परिभाषिक शब्दावली

दिनेश कुमार
स0 लेखाधिकारी



हिन्दी से अंग्रेजी शब्दावली

अभिप्रमाणित	Attested
आकस्मिक निरीक्षण	Surprise Inspection
अगले आदेश होने तक	Till further order
से प्रभावी	With effect from (w.e.f.)
के पक्ष में	In favour of
वस्तुतः	In fact
अनुबंध करना	Enter in to contract
से परामर्श करके	In Consultation with
विचार किया जाये	May be considered
भुगतान हेतु पारित किया	Passed for payment
दौरा आख्या	Tour Report
प्रति हस्ताक्षर	Counter signature
एक मुश्त	In lump sum
शैक्षणिक	Academic
विचाराधीन	Paper under consideration
अधिसूचनाएं	Notification
ज्ञापन	Memorandum
सामान्य आदेश	General Orders
कार्यशाला	Workshop
प्रगामी	Progressive
कार्यवृत्त	Minutes
अद्यतन	Up to Date
अद्यतनीकरण	Updation
विश्लेषण	Analysis
मूल्यांकन	Evaluation
वैधता	Legality
सुनवाई	Hearing
इसके द्वारा	Hereby
हस्ताक्षर	Signature
शक्ति का दुरूपयोग	Abuse of Power

Abandonment	परित्याग
Absorption	समावेश, आत्मसात्करण
Annex	संलग्न करना
Approach	पहुंच
Believable	विश्वसनीय
Casual	आकस्मिक
Character	चरित्र
Colleague	सहकर्मी / सहयोगी
Compulsory	आवश्यक / अनिवार्य
Confess	स्वीकार करना / मानना
Conflict	विरोध
Consignment	प्रेषण
Daily allowance	दैनिक भत्ता
Decentralization	विकेंद्रीकरण
Depict	चित्रित करना
Dividend	लाभांश
Earnest	कमाया हुआ / बयाना
Economical	अल्पव्ययी, किफायती
Enforcement	दबाव / प्रवर्तन
Fictional	कल्पित
Futility	व्यर्थता, निरर्थकता
General fund	सामान्य निधि
Government press	राजकीय मुद्रणालय
Habeas corpus	बंदी प्रत्यक्षीकरण
Hereditary rights	वंशानुगत अधिकार
Identification	पहचान / एकीकरण
Key note	मुख्य टीप
Laity	जन साधारण
Late payment	विलंबित भुगतान
League	संघ



श्री टपकेश्वर महादेव मन्दिर, गढ़ी कैन्ट, देहरादून।

छायाकार : श्री अमित कुमार, डी. ई. ओ.

वर्ष 2016-17 के दौरान उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रमाणपत्र तथा नकद पुरस्कार पाने वाले अधिकारी एवं कर्मचारी

क.स.	नाम सर्व / श्री / श्रीमती / कु.	पद
1.	वी.के. शर्मा	वरिष्ठ लेखाधिकारी
2.	एच.पी. सिंह	वरिष्ठ लेखाधिकारी
3.	डी.डी. पाण्डेय	लेखाधिकारी
4.	संजीव कुमार	लेखाधिकारी
5.	बी.एन त्रिपाठी	सहायक लेखाधिकारी
6.	बी.एल. मीना	सहायक लेखाधिकारी
7.	दिनेश कश्यप	वरिष्ठ लेखाकार
8.	संजीव नेगी	वरिष्ठ लेखाकार
9.	सरदार सिंह तोमर	वरिष्ठ लेखाकार
10.	राम सिंह राणा	वरिष्ठ लेखाकार
11.	सत्यप्रकाश सिंह	वरिष्ठ लेखाकार
12.	सुरेन्द्र सिंह	वरिष्ठ लेखाकार
13.	शैलेन्द्र साहू	वरिष्ठ लेखाकार
14.	घनश्याम निमेश	वरिष्ठ लेखाकार
15.	देविका रानी	वरिष्ठ लेखाकार
16.	जगमोहन लाल मीना	वरिष्ठ लेखाकार
17.	सनी राणा	वरिष्ठ लेखाकार
18.	सपना	लेखाकार
19.	नीरू राणा	लेखाकार
20.	शंभू जुयाल	लेखाकार
21.	सुशील कुमार	लेखाकार
22.	योगेश कुमार	आशुलिपिक
23.	अमित त्यागी	डी.ई.ओ.
24.	रूद्रकान्त सिंह	डी.ई.ओ.
25.	शमलेश देवी	एम.टी.एस
26.	दीपक सिंह	एम.टी.एस
27.	दिलीप कुमार	एम.टी.एस
28.	लाल सिंह	एम.टी.एस

हिन्दी सप्ताह
वर्ष 2016

हिन्दी सप्ताह 2016 के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्ज्वलित करते महालेखाकार (ले0 एवं हक0) श्री अशोक सिन्हा। इस दौरान कार्यालयकर्मियों द्वारा सुमधुर सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई। अंत में महालेखाकार महोदय द्वारा कार्यालय कर्मियों को हिन्दी सप्ताह की शुभकामनाएं प्रेषित की गईं।











हिन्दी सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इनमें टंकण प्रतियोगिता के दौरान भाग लेते प्रतिभागी एवं पर्यवेक्षक (बाएं) तथा पुस्तक प्रदर्शनी का लुत्फ लेते कार्यालयकर्मी।





श्रुतलेख प्रतियोगिता में भाग लेते प्रतिभागी। इस दौरान रंगोली प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। रंगोली में प्रतिभागियों एवं पर्यवेक्षकों के साथ विजेता रंगोली।



हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री पी. वी. के. प्रसाद, पुलिस महानिरीक्षक, जेल, कार्यालय कर्मियों को संबधित करते हुए। मुख्य अतिथि के स्वागत में समूह गीत प्रस्तुत करते कार्यालय कर्मी।





कार्यक्रम के दौरान वर्ष 2015–16 के लिए हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य हेतु नकद प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते श्री जवाहर सिंह, वरिष्ठ लेखाकार (बाएँ)। समारोह में गीत प्रस्तुत करते श्री गणेश प्रसाद, स0ले0अ0 एवं कविता पाठ करते श्री रामबीर सिंह, व0ले0अ0।



प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागी एवं गीत–संगीत कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाले सभी कार्यालयकर्मी पुरस्कारों के साथ (दाएं)। हिन्दी कार्यक्रम की सफलता हेतु पुरस्कार लेते श्री दिनेश कुमार, स0ले0अ0।



नवनिर्मित कार्यालय भवन "महालेखाकार भवन" का सीएजी द्वारा दिनांक 12.07.2017 को उद्घाटन













भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक श्री शशिकांत शर्मा रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए।



सीएजी महोदय एवं उनकी पत्नी श्रीमती संध्या शर्मा मंच की ओर बढ़ते हुए।



महालेखाकार (ले0एवंह0) श्री अशोक सिन्हा स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए।



दीप प्रज्ज्वलित करते सीएजी महोदय एवं अधिकारीगण।



सरस्वती वंदना प्रस्तुत करती कार्यालय महालेखाकार की महिलाकर्मी।



कार्यालय महालेखाकार (ले0एवंहक0) के पुरूष कर्मियों द्वारा शानदार संगीत प्रस्तुति दी गई।



भवन निर्माण संबंधी जानकारी देते श्री एस.सी. भारद्वाज, मुख्य अभियंता।





भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक श्री शशिकांत शर्मा कार्यालयकर्मियों को संबोधित करते





सीएजी महोदय, पत्नी श्रीमती संध्या शर्मा के साथ नवनिर्मित कार्यालय भवन का विधिवत् उद्घाटन करते हुए।



कार्यक्रम में धन्यवाद प्रस्ताव देते महालेखाकार (लेखापरीक्षा)।



कार्यक्रम में उपस्थित महालेखाकार (ले0एवंहक0) तथा महालेखाकार (लेखापरीक्षा) कार्यालय के अधिकारीगण।



कार्यक्रम के दौरान सीएजी महोदय पत्नी श्रीमती संध्या शर्मा के साथ।



वृक्षारोपण करते सीएजी महोदय।



जलपान ग्रहण करते सीएजी महोदय एवं श्रीमती संध्या शर्मा।



वरिष्ठ अधिकारीगण जलपान ग्रहण करते हुए।



भवन निर्माण संबंधी जानकारी देते श्री एस.सी. भारद्वाज, मुख्य अभियंता।



कार्यालय भवन का निरीक्षण करते सीएजी महोदय।



कार्यालय भवन का निरीक्षण करते सीएजी महोदय।



अधिकारीगणों के साथ महालेखाकार (ले0 एवं हक0) श्री अशोक सिन्हा।



कार्यक्रम में उपस्थित अतिथिगणों से बातचीत करते महालेखाकार (ले0 एवं हक0) श्री अशोक सिन्हा।













कार्यक्रम में उपस्थित
अधिकारी एवं कर्मचारी गण।

नवनिर्मित कार्यालय भवन की झलकियां



















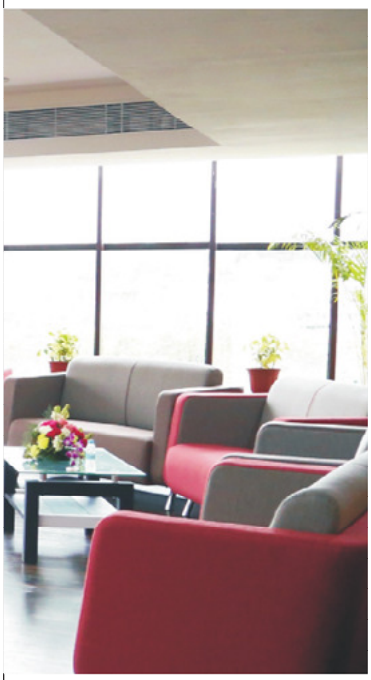












मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित खेल प्रतियोगिताएं



किकेट टूर्नामेंट में ट्रॉफी के साथ विजेता टीम।



क्रिकेट विजेता ट्रॉफी देते सचिव, महालेखाकार।





किकेट टूर्नामेंट में उप विजेता ट्रॉफी दी गई। बैडमिंटन टूर्नामेंट में विजेता एवं सभी प्रतिभागी।



फुटवॉल टूर्नामेंट में विजेता एवं उप विजेता समेत सभी



क्लब द्वारा आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में आयोजक एवं निरीक्षकगण।



शतरंज प्रतियोगिता में आखिरी मुकाबला खेलते प्रतिभागी। श्री अरूणेन्द्र भदौरिया विजयी रहे।



नराकास, देहरादून की पत्रिका 'दूनवाणी' के प्रकाशन में उत्कृष्ट सहयोग हेतु भारत के महासर्वेक्षक से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री दिनेश शर्मा, लेखाकार।



श्री रोहित रतूडी, लेखाकार बैडमिन्टन 'इण्डिया इन्टरनेशनल सीरीज' 2016–17 में भाग लेते हुए।





श्री इकबाल सिंह, स0 लेखाधिकारी को दिनांक 31.07.2017 को सेवानिवृत्ति के अवसर पर पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए उपमहालेखाकार (प्रशासन)

स्वतन्त्रता दिवस समारोह–2017















हरिद्वार, उत्तराखण्ड

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून